Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Mang 2

13.8.35.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Upadeśacandrikā.

Upadesh Chandrika

उपदेशचन्द्रिका

اپدیش چندرکا

जिसमें

विद्योपार्जन, सत्सङ्ग, हरिभजन, दया, क्षमा, शील, सत्य
परोपकार, साहस, धैर्य्य, सत्कार, आदर, दान
प्रणा, उपाय, सावधानता, अभानता
मौनता, अक्रोधता, दीनता, सा-
धुता आदि विषयों का दृष्टान्तों
सहित वर्णन है

वह

सब विषयग्राहकों के उपकारार्थ

स्थान लखनऊ

मतबअ़ मुन्शी नवलकिशोर में छापी गई

जुलाई सन १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात जुलाई सन १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	५- उद्योगपर्व्व	३- आरण्यकाण्ड	नाटक
महाभारत	६- भीष्मपर्व्व	४- किष्किन्धाकाण्ड	प्रबोधचन्द्रोदय
१- पहिले हिस्सा में	७- द्रोणकर्ण	५- सुन्दरकाण्ड	रामाभिषेक
आदिपर्व्व सभापर्व्व	८- कर्णपर्व्व	६- लंकाकाण्ड	आनंदरघुनन्दन
वनपर्व्व	९- शल्यपर्व्व व गदा	७- उत्तरकाण्ड	भ्रमजाल नाटक
२- दूसरे हिस्सा में वि-	पर्व्व सौप्तिकपर्व्व मय	रामायण शब्दार्थकोष	वेदान्त
राट्पर्व्व उद्योगपर्व्व	योशिक व विशोक व	रामायण का इतिहास	योगवाशिष्ठ
भीष्मपर्व्व द्रोणपर्व्व	स्त्रीपर्व्व	रामायण मानसदीपिका	सुन्दरविलास
३- तीसरे हिस्सा में क-	१०- शान्तिपर्व्व राज	रामायण कवितावली	आनंदामृतवर्षिणी
र्णपर्व्व शल्यपर्व्व गदा	धर्म्म मोक्षधर्म्म व दान	रामायण गीतावली स-	सांख्यतत्त्वकौमुदी
पर्व्व सौप्तिकपर्व्व योशिक	धर्म्म	विनयपत्रिका बाबू मो-	काव्य
पर्व्व विशोकपर्व्व स्त्री-	११- अश्वमेध आश्र-	विनयपत्रिका बाबू शि-	सूरसागर
पर्व्व शान्तिपर्व्व में राज	मवासिक मुशलपर्व्व	विष्णुपुराण भाषा	कृष्णसागर
धर्म्म आपद धर्म्म मोक्ष	महाप्रस्थान स्वर्गारो-	लिंगपुराण	विश्रामसागर
धर्म्म	हन	ब्रह्मोत्तरखण्ड	प्रेमसागर
४- चौथे हिस्सा में शा-	१२- हरिवंशपर्व्व	शुक्रनीति	ब्रजविलास बड़ा व छोटा
न्तिपर्व्व दान धर्म्म अश्व-	रामायण रामविलास	रसवृष्टि व रसचंद्रोदय	कृष्णप्रिया
मेध आश्रमवासिकप-	रामायण तुलसीकृत	सुदामाचरित्र	अनेकार्थ
र्व्व व मौशलपर्व्व व	रामायण सटीक मयसा	कृष्णगीतावली	छन्दोर्णवपिङ्गल
वाणप्रस्थान स्वर्गारो-	नसदीपिका कोष आदि	श्रीअनुरागरस	रसराज
हनपर्व्व हरिवंशपर्व्व	तथा जिल्द बंधी	सौदागरलीला	सत्सई मूल व सटीक
महाभारतपर्व्व अलेह-	तथा मोटे अक्षरों को म	विजयमुक्तावली	सभाविलास
दा भी हैं	यतसवीर व क्षेपक	विजयदोहावली	तुलसी शब्दार्थ प्रकाश
१- आदिपर्व्व	रामायण तुलसीकृत	विजयचंद्रिका	भजनावली
२- सभापर्व्व	सातों काण्ड	सिद्धान्तसङ्ग्रह	प्रेमरत्न
३- वनपर्व्व	१- बालकाण्ड	रामविनयशतक	युगलविलास
४- विराटपर्व्व	२- अयोध्याकाण्ड	भविष्योत्तरपुराण	चित्रचंद्रिका

श्रीगणेशायनमः ॥

उपदेशचंद्रिका ॥

दो० यूथप यूथप बदन प्रभु सिद्धि सदन एक दंत।
खन कारू ढ़ायत उदर नमोनमो भगवन्त॥
कारण सर्गस्थिति प्रलय पद्मयोनि भुज चारि।
जगत मातु अज वामवर नमोसुमति दातारि॥
पवन जात संकट हरण खल गण शमन कृपाल।
नमो दशानन मान हर जन रक्षक तिहुकाल॥
श्री गुरु हरिहरसकल सुरदयाराशिसुखरूप।
वन्दौ सब के पद वनज उपजै सुमति अनूप॥
कवि कोविद हरिजन चतुरजोविद्याधर होइ।
बिनवत मंगल जोरि कर कृपा करौ सबसोइ॥
संवत गह चष नन्द महि मधु सुपक्ष भृगुवार।
चौथि रोहिणी तेहिसमयलयोग्रन्थ अवतार॥
सुजन बाँचि लखिहैं सुजन कुजनकुजातिकुवात।
हाटककांच स्ववर्ण सम चौहट बाट बिकात॥
कारण कथा करन कर एहा। यकदिन सथिर रहौंनिज गेहा॥
बुधिबोधिनिद्रमिमोहिंजनायो। ज्ञान विराग बहुत तुम गायो॥
सो कोउसाधुसुमतिसौं हेरिहि। मन मलीन बिषयनते फेरिहि॥
यक उपदेश चन्द्रिका भाषिय। जगकिमिरहैवदिययुतसाखिय॥
पुनि मन कहा कहा भटकावै। उततै इत क्यों मोहिं चलावै॥
बुधि बद जगत जन्म फल एहा। भाषिय सीख पाय नर देहा॥
नर तन महा सिद्धि ते पाइय। सो किमिअज्ञ अयोग गमाइय॥
यह संसार असार बखाना। तामहँ प्रथम तत्व प्रभु ध्याना॥
दो० सकल योनिमहँ भ्रमित ह्वै पायो मनुजशरीर।
ताहू में रह मूढ़ मन बिषय बिलाश अधीर॥

अथ प्रथमोपदेश विद्याउपार्जन ॥

मानव तन लहि प्रथम सुजाना। विद्या धन जोरै तजि माना॥

बहुश्रम करै त्यागिजग ख्याला। सीखै बिविधि भांति गुणशाला॥
विद्या सम न त्रिपुर धन कोई। देव सिहात गुणी तन जोई॥
विद्या भव दधि बोहित जानिय। पुनि सोपान स्वर्ग अनुमानिय॥
विद्या हीन न सत मग पावै। भूप सभा नहिँ सुजन कहावै॥
विद्या अजर अमर पद दाता। विद्या धनहि कुबेर लजाता॥
कोटि बन्धु सम बल दातारा। विद्या बिनु न मिलत करतारा॥
विद्या कीरति देत अछीना। भोग हर्ष दै करत प्रबीना॥
दो० विद्या सत गुरु बंधु जन अन्यदेश हित कारि।
ताहि सीखियै यतन करि सब उद्योग बिसारि॥
सो० भूपति सुरपति तूल पूज्य होत निज देश मह।
विद्याधर सुख मूल पूज्य देश परदेश सम॥
उपजो सुथल सुकुल शुचि काया। रूप बिलोकि विदेह लजाया॥
अति बलखानिबालिमद घालक। समरभूमिअरि गण उरशालक॥
विद्या रहित अरोग्य अशोभा। जिमिमधुकरहिनकिंशुकलोभा॥
विद्या बल कीन्हे नृप ताई। प्रजा बढ़ै नृप सुर पुर जाई॥
बैरी मात पिता ते भाई। जे न बालकहिं देत पढ़ाई॥
ते गुरु अधम पाप की खानी। जेन सिखावत सीख सुवानी॥
बार बार नर जन्म न होई। महा पुण्य बश पावत कोई॥
तहँ पुनि रहा मूढ़ अज्ञानी। पशु ते अधिक दशा अनुमानी॥
दो० सन्त सुजान महान मति पंडित मंत्री राज।
विद्याबल सब होत जग लहत विवेक समाज॥
कोउ उपबन बाटिका लगावत। सरवर शुचि कोउ कूप खनावत॥
कोउ तट नीन सेतु रचवावत। करि उपाय भव पंथ चलावत॥
मन्दिर रचना करत सयाने। नाम हेतु संतान लुभाने॥
पर कछु काल गये जग माहीं। कारक नाम रहत बुध नाहीं॥
अरु जेहि विद्या बल भल पावा। काव्य ग्रंथ कोउ सुरुचि बनावा॥
सोनहिंमिटिहिप्रलयलगुताता। धनि विद्या धनि धनि गुणदाता॥
चौदह विद्या भनत सुजाना। तदपि चतुरता सकल प्रधाना॥
जे जन्मे कलि बुधि भल पाई। धनि ते मनुज बँदौं शिर नाई॥
दो०॥ नीचलहत पद ऊंच भव विद्या बलतिहु काल।
अधमहु त्यागत दुर्मतिहि होतमहीशदयाल॥
शेष सर्प तन विद्या पाई। बन्दनीय जिमि गुरु सुरराई॥
काक भुसुंडि पक्षि चाण्डाला। द्विजपति जाइ नवायो भाला॥

गुप्त मर्म्म विद्या बल जानिय। कर्म अंक गति प्रगट बखानिय॥
मूरख अवशि निरादर रहई। काहू थल न सुयश भव लहई॥
मूरखते न अधम जग कोई। यदपि विप्र कुल उपजै सोई॥
मूरख नरक बसत परिणामा। रहत जन्म भरि सो अघ धामा॥
मूरखके न बिवेक विचारा। केवल कुमति कुकर्म्म पसारा॥
करत अधर्म्म कर्म मुद मानी। पाप मूल ध्यावत अज्ञानी॥

दो० सुनौ एक इतिहास बर प्रथम काल की तात।
जाते निज मन बूझिये पंडित मूरख बात॥

द्विज वर एक ज्ञान गुण खानी। वैदिक सुकुल कर्म विज्ञानी॥
शिक्षक किधौं देव गुरु दूजा। करै सदा नारायण पूजा॥
बड़ नीतिज्ञ चतुर जग जानै। तेहि उपदेश जीव गण मानै॥
एक दिवस धन हेत सिधावा। मारग मध्य काल चलि आवा॥
करिप्रणाम कह बाणिबिनीता। द्विजवर हमहिं सुनाइय गीता॥
निज स्थान पण्डित कहलाई। आदर अधिक कीन्ह हरिराई॥
बिप्र ताहि हरिगीत सुनावा। बिविधिअर्थ कहिकहिसमुझावा॥
लेलिह राज मोद मन माना। मुद्रा स्वर्ण पंच दिय दाना॥

दो० अरु कह नित प्रति आइ प्रभु गीता कहिय बुझाय।
तात आपु की कृपासन मुक्ति लहौं दुख जाय॥

तुम गुरु शिष्य तोर मैं स्वामी। बिदाकियो करिबिविधि नमामी॥
धनि विद्या जेहि सर्प सिखावा। विद्याधरहि सप्रेम पुजावा॥
सत्य बदत पण्डित गुणराशी। विद्या देत शत्रुता नाशी॥
पंडित सधन आव निज धामा। द्रव्य सनेह धरी कर वामा॥
प्रातकाल पुनि तेहिथल जाई। दान लीन्ह हरि गीत सुनाई॥
यहिप्रकारप्रतिदिनद्विजसोई। अहि थल जात हेतु निज जोई॥
नागराज अति नेह बढ़ाई। नमत बिप्र पद सतिय खभाई॥
मानत गुरु समान मन काया। दुबिधा कुमति प्रपंच दुराया॥

दो० द्विजवर तिय यक दिन भन्यौ कह पावौं धन नाथ।
विप्र स्वभाव न जान छल बरणि सुनाई गाथ॥

त्रिय मूरख मति हीन अयानी। छत विपरीत चित्त अनुमानी॥
सुतहि बोलि सब मर्म सुनावा। सो मूरख सुनतहि हरषावा॥
सम्मत कीन्हमहाधनलीजिय। सर्पहि बधि सूरज पुर दीजिय॥
यकदिन नारिबिप्रसन भाषा। दक्षिण पट की मन अभिलाषा॥
महँगे मोल मिलत मम नाथा। निज कर लाइ देऊ शुचि गाथा॥

खगपतिगणपतिपगकरिध्याना। चीर हेतु किय कतहुं पयाना॥
सुतप्रतिनारिकहिसिअबजाहू। अहिबधि धनहि लेहु हत काहू॥
तब सुत पुस्तक काँख दबाई। परशु वस्त्र महँ लीन्ह लुकाई॥
दो० सदा काल सम काल तहँ आवा आनँद पाय।
विप्र बालकहि देखिकह कोहसि तू द्विजराय॥
सर्व कथा नागहि समुझाई। बैठो आसन दर्भ डसाई॥
इत उतकी मूढ़ता बखानै। सो कुपथ्य गीता कह जानै॥
मन-गूढ़ता करत अनुमाना। बकवादी द्विज दुचित महाना॥
मन वच तन पंडित जो गावै। सो पद पद्मन यहि कहि आवै॥
कारण गुप्त अहै भ्रमनाहीं। इमि चिंतमित चक्रि मनमाहीं॥
तेहि अवसर द्विज परशु पवारा। सर्प पुच्छ लगि भे द्वैफारा॥
ज्वलित क्रोध आसीविषधावा। डस्यौ विप्रतन मोह जनावा॥
तजि तन दंडक भवन सिधारा। मृतक शरीर रहा हरिद्वारा॥
दो० विद्या बल संपति लही जड़ता बश भा नाश।
मूढ़न को संसार महं होतन कतहुं प्रकाश॥
सो० दूसर दिन द्विजनारि जाइ दीख सुत मृतक तहँ।
निज अपराध विचारि मृतक लाइ हतकीन्ह सब।
कछु दिनगत द्विजपति गृहआवा। रुदतवाम लखिबहु दुखपावा॥
पूछे भेद कहा सबु जाया। दुखद्विज लहामनोवच काया॥
भो जड़ नारि पुच निज खोइसि। शिष्य संपदा तेकर धोइसि॥
प्रात समय निज प्रकृति समाना। गयउ विप्र अहिवरके थाना॥
दूरिहि ते करि दण्डप्रणामा। बोला नाग सुनिय सुखधामा॥
गुरु दक्षिणा लेहु गृह जाहू। कृपाकरयोपुनिअसजनिकाहू॥
सुत पढ़ाय मोहिं हतन पठावा। गीता ज्ञान भलो हौं पावा॥
यद्यपि होइ न दोष तुम्हारा। तदपि चित्त दुविधा बिस्तारा॥
दो० तब उर बालक शोक प्रभु पुच्छ मोरि द्वै खण्ड।
अब सतसंग अयोग्य बड़ ईंधन अनल प्रचंड॥
नीति वदत हितु अरिजो होई। अथवा अरिहितु भुवतल कोई॥
तासन प्रीति प्राण हत हानी। यहबिचारि गमनौ गृहज्ञानी॥
द्विज आवा निज सदन लजाई। तीनि प्रकार हानि दुखदाई॥
सुत सम्पदा शिष्य तजिदीन्हा। जड़ताविवशनारि कसकीन्हा॥
देखहु विद्या केरि बड़ाई। ज्यहि द्वारा विदेववश भाई॥
जड़ता महा मृत्यु की चेरी। सुपथ स्वर्ग ते देत निबेरी॥

आपति मूल मूढ़ता भाखी। वेद पुराण संत जन साखी॥
यहिकारण तजिहठ कदराई। सीखहु सुजन सुविद्या भाई॥

दो० मुक्ति मूल विद्या वदत भुक्ति मूल सुखमूल।
मंगलमन विद्याबिना अमित जन्मको शूल॥

सत्संग॥

विद्या पाय करिय सत संगा। त्यागि सकलविधि नीचप्रसंगा॥
सुजनसमाज सुमति श्रुतिकारक। कुकृत विनाशक सुकृत प्रचारक॥
सत संगति पारस सम गाइय। मूढ़ जीव अय रूप बताइय॥
परसत पुरट होत तन एही। महँगे मोल बिकत वरदेही॥
बिनु सतसंग न सुमति दृढ़ाई। अरुन कलाधर लहत बड़ाई॥
साधु सभा गुण खानि सदाहीं। जड़मति तहांजात लखु नाहीं॥
जो विद्वान बसत शुचिसंगा। सो पावत कीरति प्रति अंगा॥
मूढ़ समाज हानि गुणकेरी। सरित नीरजस उदधि बसेरी॥

दो० कवि पंडित जन अनल तृण परै कोउ लघुऊंच।
करैं आपु सम दोषगत क्योंहूं होइन हूंच॥

सत मारग कीरति प्रभुताई। बिनु सतसंग लहत कठिनाई॥
धन जनगति मति विनय विवेका। सतसंगति बिनु होत न एका॥
क्षीर संग जल क्षीर समाना। विकट हाटकोउ कहतनआना॥
कीट प्रसून संग हरि शीशा। चढ़त सदाबर मुकुट महीशा॥
जल अपवित्र मूत्र इत्यादी। मेघ संग भा पावन आदी॥
वाल्मीकि की विदित कहानी। नारद संग भये विज्ञानी॥
नीच संग मति नीच कहावै। लोह संग हाटक नशि जावै॥
जन शुचि होत विवश संसर्गा। अंत लहत बुध सुख अपवर्गा॥

दो० पाप मूल अपकारि जड़ हिंसक लोभी होय।
प्रकृति त्यागि शुभगतिलहै सत संगति भ्रम खोय॥

भव सागर दुस्तर श्रुति गावा। कोधौं बूड़ पारको पावा॥
सो सतसंग प्रभाव अखेदा। गोपद तुल्य तरत बद बेदा॥
कुमति बेलि मन तरु लपिटानी। अमित कष्ट दायक जग जानी॥
तहँ सतसंग प्रभाव कुठारी। क्षणक मध्य सब देत निवारी॥
जल कण ज्वलित लोह पर परई। निश्चय सर्व भाव दुख भरई॥
परत पद्म दल जल कण भाई। मुक्तारूप लहत सुख दाई॥
नीर विन्दु सीपी मुख आवै। नीरज होय मोल भल पावै॥

चातक उदर होत सुत ताको। भव प्रसिद्ध सत संगति शाको॥

दो० शालिग्राम खनार घर कहत कसौटी लोग।
विष्णुभक्त पहँ हरि सदृश धनि सतसंग प्रयोग॥

सुरा भवन ब्राह्मण नित जाई। मदिरा दोष लगै तेहि भाई॥
साधु समाज मूढ़ नित आवै। कछु दिन गतजग चतुर कहावै॥
एक नगर महं चहुं दिशि कोटा। चारिद्वार विधिचारि अगोटा॥
एक द्वार निशि खल छत जूपा। बाहिर कोट मानि भय भूपा॥
दूसर बार वारुणी धामा। जूपी पाण करत परिणामा॥
तीसर द्वार मांस पकवाना। बेंचत बणिक सुनौं बुधिमाना॥
द्वार चतुर्थ खैरिणी वामा। बसहिं राजडर नारि ललामा॥
मदिरा मांस भषहि सब ज्वारी। भोगहि खबस जायते नारी॥

दो० बन्द होत पुर द्वार सब रैनि बिती तत याम।
जातन कोउभीतरनगर नहिं बाहिर नरग्राम॥

अर्द्ध निशा यक जैनी कोई। तेहि पुर गयउ पंथ भ्रमखोई॥
सकल द्वार संपुटित कपाटा। अन्तर गमन करै नहिं बाटा॥
तब अनुमान कीन्ह मन माहीं। वुधिहा सदन बसत बिधिनाहीं॥
पल गृह अरु गणिकाके साथा। कस निवसौं हे पारस नाथा॥
तब ज्वारिन के मन्दिर जाई। दीन बाक्य अस गिरा सुनाई॥
हम एक दास क्षुधित अतिप्यासे। पौरुष पंथ चलन थक तासे॥
प्रथम कूप करि कृपा बतावौ। करि जल पान कलेश दुरावौ॥
एक कहिसि नहिं यहि थलकूपा। खेलत इहां सकल जुरि जूपा॥

दो० द्यूत कर्म महं चातुरी जो जानौ कछु तात।
आनि बसौ यहि धाम नत जनि परसावहु गात॥

सुनत भयो मन अति पछितावा। हे अरहन्त कहां चलि आवा॥
कुसमय कुथल करौं कस नाथा। चहु थल कुजन कुमति करसाथा॥
तदपि तीनि ते यह थल नीका। कहौं न मर्म आपने जीका॥
बोला बिविधिभांति अनुमानी। सुनहु तात मम गिरा प्रमानी॥
जूप कर्म महं हौं नल दूजा। सुनि तव वचन मनोरथ पूजा॥
अंतर भवन गयउ चलि सोई। खेलन जूप लग्यौ रुचि जोई॥
अल्प काल महं बहु धन जीता। ज्वारिन प्रति वद वचन बिनीता॥
महा तृषा व्यापी यहि काला। कूप बताइय दीन दयाला॥

दो० इहांन जलको लेसहै योजन चय पर यन्त।
सुमिरि शक्ति मदिरा पिओ आनंद रूपी तन्त॥

सो० बिवश कहा नहिं होत आरत करत कुकर्म भव।
त्यागि रीति निजगोत पान करयौ मदिरा तुरत॥
मदिरा की मादकता आई। बढ़ी क्षुधा तन तृषा नशाई॥
भक्ष्यौ मास अमित सुखपाई। तेहि बश काम बिथा मन आई॥
गणिकारमणजाइ पुनिकीन्हा। कछुन श्रावका चारहि चीन्हा॥
उतरयो मदन बभयउ बिहाना। अतिहिग्लानिव्याकुलबड़प्राना॥
परयौ कुसंगति आधी राती। खोई धर्म कर्म की पाती॥
यहि कारण कुसंग क्षण एका। बसतनहरिजन लखिअबिवेका॥
कज्जल भवन कुसँग जग ताता। लगै कलंक प्रवेशत गाता॥
सुजन संग जनु गन्धि अवासा। क्रयबिक्रय नहिं तदपिसुवासा॥
दो० बारिधसिय बिनुजानचहुं अनल जरिय बिनु काज।
मंगल भूलि न सेइये खल गृह कुजन समाज॥
जब सतसंग कर्म्मबश होई। तबहरिभजियसकल भ्रमखोई॥
मनुज शरीर पुण्य बश पावै। मूरुख त्यहि बिनु भजन गमावै॥
सकल सिद्धि नारायण ध्याना। ज्यहि आधीन ज्ञान बिज्ञाना॥
बिनु हरिभजन मूढ़ नरनागर। तरै न बिषम धार भवसागर॥
कर्त्ता पालक श्री घनश्यामा। तासुभजन बिनुअघ परिणामा॥
भक्तप्रिय कारुणिक मुरारी। भजिय ताहि सबकपटबिसारी॥
सतसंगति फल राघव ध्याना। कहतसन्तश्रुति बिपुल पुराना॥
बैदिक चतुर गुणी ब्रतधारी। बिनुहरिभक्त न कुछ नर नारी॥
दो० तैलकारको वृषभ जिमि चलत अगारी धाय।
पै भ्रमात निज ठौरही सो जानत नहिं भाय॥
सो० तिमि मायाबश जीव मोह यंत्र यंत्रित फिरत।
तजत न भ्रमकी सीव फिरिफिरि आवत जात जग॥
भजन प्रभाव बिदित चहुं कोदी। बरणतकविजन बिमलबिनोदी॥
नीचहु लहत परम पद भाई। त्रिपुरबिदित हरिभजनबड़ाई॥
निश्चय विनय बासना नाशै। ज्ञान दीप बुधि हृदय प्रकाशै॥
सभै प्रभु महिमा दिशि चारी। मिटै मोह तम बिनु श्रम भारी॥
अनुबादन हरिचरित अपारा। करहिंपरस्पर श्रुति अनुसारा॥
प्रथमहिं नाम पाग शिर धरई। तजै न कोटि बिघ्न किन परई॥
सुमति चोलना रँग अनुरागा। धारण करै सुकुल शुचि बागा॥
हरि गुण गान उपरना करई। कटि परिकर स्वभाव दृढ़धरई॥
दो० क्षमा चर्म्म बिज्ञान असि ज्ञान कटार बनाय।

दया धनुष शर शान्ति करि तूण सुविद्या भाय॥
कवच गुरू उपदेश बनावै। सतसंगति रथ चढ़ि सुख पावै॥
बाजि लगाय विवेक बिरागा। सत्य सारथी ताजन बागा॥
सन्त महारथि चलै दुहेला। खेलै बिपुल भांति रण खेला॥
बधै मोह दल मत्सर कामा। लोभ क्रोध मद लावै दामा॥
भक्ति बन्धनी सबहि बँधाई। भव रणभूमि तुरत लँघि जाई॥
आगे देश सुराज्य सोहावा। जहँ न मोह माया दुखदावा॥
बसत लोग बहु सदन सोहाये। जे नहिं नर प्राकृती बनाये॥
वक अनुहारि सबै तहँ देखिय। बरणाबरण न खग पशु लेखिय॥
दो० खबस बास निबसिय तहां मंगल मंगल रूप।
मिटै चिन्हारी बरण गृह आश्रम निरधन भूप॥
भजन भेद बहु भांति बखाना। बाढ़ै कथा करत कलगाना॥
अखिल भजन महँ नाम प्रधाना। मंगल रटिय सुरुचि भगवाना॥
अजामील वेश्या रत रहई। खपनहुं राम नाम नहिं कहई॥
अन्त नाम नारायण लीन्हा। तेहिप्रभावप्रभु निजपुरदीन्हा॥
सहस वर्ष गजग्राह लरोई। मुच्यो न पौरुष अमित करोई॥
हे हरि चाहि बाणि जब भाषी। छूट तुरन्त सन्त श्रुति साषी॥
ध्रुव कहि नाम लहा ध्रुव धामा। जन प्रहलाद भये जपि नामा॥
यागेश्वर शङ्कर अविनाशी। जपत सदा प्रभु अवध बिलाशी॥
दो० राम श्याम सरगुण भजन नव बिधि भक्ति दृढ़ाय।
निरगुण प्रणव प्रधान जप अजपा सुखद सदाय॥
सो० जो भाखिय बिस्तारि भजन प्रभाव विभाति युत।
बढ़ै ग्रंथ बिधि चारि पार कहां हरिभजन कर॥

दया॥

हरि जन होइ दया को धामा। सहज स्वभाव लहै बिश्रामा॥
धर्म मूल श्रुति दया बखानी। अचल राखि धीरज की खानी
दयावन्त जन सन्त महन्ता। हरिपुरबसतसो काल अनन्ता॥
सुकृत सभासद गुण अनुरूपा। दया विभाति विमोह न भूपा॥
भक्ति योग बिज्ञान बिसारै। तरै विशेष दया उर धारै॥
संसृत उदधि सुकृत जल जाना। दया शुभग कनिहार सुजाना॥
दया देखि दल मोह पराई। दया वान समनहिं सुरराई॥
जाके हृदय दया नहिं राजै। तेहि बिलोकि लज्जा मनलाजै॥

दो० यद्पि दया सब जीवपर कीजिय एक समान।
बदतसुमति फल तासुको सुरपुर बास अमान॥

तदपि हृजिये दीन दयाला। विथकितकेर करियप्रतिपाला॥
पीड़ित दुखित मनुष्य निहारी। करिय सहाय दया उरधारी॥
नर निर्दया महा चाण्डाला। दर्शन प्रात कि धौं दुख जाला॥
दया रहित लखि मनुज शरीरा। कर्त्ता हृदय उठत बड़िपीरा॥
धिक जीवन जग दया बिहीना। नीररहितसरनिशिशशिहीना॥
बिनु पानी मुक्ता न सोहाई। तिमि बिनुदया मनुजतनभाई॥
बिय सौभागिनि रति दिनपाई। बहु शृंगार करै सुख छाई॥
कन्त बिहीन वृथा तन साजा। सुकृत सिंगारसरो नहिंकाजा॥

दो० अधम कुकर्मी नीच खल उत्तारी तस्कर होय।
बसै स्वर्ग बहु काल नर दयावन्त जो कोय॥

पुंडक नाम एक शालूरा। निजकुलअधिपतिगुणनिधिपूरा॥
बसत सदा नद बिमल तड़ागा। परिजन पुरजन सहित सभागा॥
एक दिवस केवट तहँ आये। सर तट बैठि सुदूमि बतराये॥
अब यहि सरवर नीर भुराना। खेलब मृगया मीन बिहाना॥
तेमछुआ निज सदन सिधाये। पुंडक बचन सुनत अकुलाये॥
निज जातीय सकल हकराये। यथा योग आसन बैठाये॥
सुनौं तात सफरी अरि काली। जलते करिहि सरोवर खाली॥
वधिहि मत्स्य चितदै सुनिलेहू। बचै प्राण कीजिय छत एहू॥

दो० समाचार श्रवणित सकल भे व्याकुल ततकाल।
आन वृद्ध मण्डूक यक बोल्यो बचन रसाल॥

भाषत चतुर तजिय धन धामा। राखिय प्राण पुत्र हितु बामा॥
जीवन गत नहिं जीवन पावै। संपति गृह कहि कारन आवै॥
यहि थलते प्राची दिशि भाई। शुचि तड़ाग पुष्कर समताई॥
चलि तहँ बसिये युत परिवारा। मंत्र तात तुमनीक बिचारा॥
पुंडक सहित अपर मण्डूका। चले सकेलि करत बड़ि कूका॥
विथकेउ पुंडक बीच कुपंथा। बिसरी बिपुल ज्ञान धन संथा॥
तत्क्षण वायस जात उड़ाना। क्षुधितनिरखिदादुर हरषाना॥
ऊरध पथ तजि हेठहि आयउ। चोंच घात पुंडकहि गिरायउ॥

दो० काक शब्द सुनि काक बहु आये धाय समोद।
घातत तन पुंडक बिकल घेरै खल चहुं कोद॥

यहि अवसर ययातिमहिपाला। आवा तहँ बर बहि दयाला॥

दादुर देखि दया अति बाढ़ी। नैन नीर रोमावलि ठाढ़ी॥
उतरि तुरग ते ताहि बचावा। बस्त्र लपेटि बाजि बैठावा॥
जाइ सरोवर ताहि उतारा। तब पुंडक इमि बचन उचारा॥
दयाराशि धनि धनि नरनायक। भवतल द्वितिय न समतालायक॥
भोगि भूमि जब त्यागहु देहा। स्वर्ग बिलासहु आशिष एहा॥
दया सिंधु मम प्राण बचावा। मोसनप्रतिफलनहिंबनिआवा॥
मोरे पुण्य प्रताप नृराई। बसहु स्वर्ग बहुकाल दृढ़ाई॥

दो० सुनिययाति आवासदन समयपाय तजिकाय।
गयउ देवपुर यानचढ़ि बिनु प्रयास मुदपाय॥

सुकृत तुल्यकिय भोग बिलाशा। तब सुरपति इमिबचन प्रकाशा॥
महाराज तव पुण्य सिरानो। सुरपुर तजिय गिरा मम मानो॥
सुनों शक्र चित दै मम बाता। आज्ञा वेद शास्त्र विख्याता॥
जबलगि मनुज सुयश युतनामा। भूतल कहहिं सुनहिं नरबामा॥
तबलगि सो जन स्वर्ग निवासै। देवराज कस ताहि निकासै॥
नाम सकीरति भवतल मोरा। जांचि देखिये मानि निहारा॥
तात सत्य अस वेद बखाना। स्वर्ग निराकृत कौन प्रमाना॥
महितल को तव कीरति गावत। काके हृदय स्वर्ग तब भावत॥

दो० असुक सरोवर बसत यक दादुर पुंडक नाम।
ताहि पूछि निश्चय करिय देवराज गुणग्राम॥

सो० हरि अनुशासन पाय दूत गयउ सरवर निकट।
पुंडककहि गुहिराय वर्णन लाग्यो विमलमति॥

सुनोंतात यक नृपति ययाती। प्रथमहिं भयउप्रबल शशिजाती॥
सुरपुर निवस्यो पुण्य समाना। बसिहि नरक अवहोत विहाना॥
रावत पुंडक सुनि सुरबाता। शिरधुनिविपुल भांतिपछिताता॥
अहह दैव तवगति प्रतिकूला। साधु नरक स्वर्ग अघमूला॥
नृपति ययाति दयाकी राशी। सो अब होइहि नरक निवासी॥
हमरे सुकृत विवश भगवाना। हरिपुर विहरै सब सुखसाना॥
सुनि इन्द्रारक हरितट जाई। पुंडक कथा जोरि करगाई॥
तब ययाति प्रतिवद सुरपाला। करो विहार और कछुकाला॥

दो० यावत् पुंडक भूमितल तावत्स्वर्ग बिहार।
धन्यदया जाबश बहुरि लहाभूप सुखसार॥

सो० मूढ़ मलिन मतिकूर तजत दया मायाविवश।
रहत स्वर्गते दूर बसत नरक निज प्रकृति बश॥

क्षमा ॥

दया विशेषि क्षमा बिनुआये। शोभितनहिँशशि बिनुनिशिपाये॥
चाहियक्षमा अवशिउरमाहीं। कीरति विमल क्षमाबिनु नाहीं॥
धनबल हाइ कि भुजबलताता। दलबल पदबल देइ विधाता॥
विद्याबल चहुं तपबल होई। अथवा आन प्रकारहु कोई॥
जहां अपरगुण चहिय अनेका। पहिले तहां क्षमा को टेका॥
जे धीमान सुजन संसारा। राखत क्षमा हृदय सविचारा॥
ताहि बड़ा सब लागन भाषा। क्षमै चूक लघु की अनभाषा॥
नत लघु दीरघ एक समाना। कौनु बड़प्पन पद अभिमाना॥

दो० प्रकृति विवश नर चतुरहु चूकिजात गुणखानि।
विदित बातयह चारिविधि भाषत वेदप्रमानि॥

सो० चूक लघुन सनहोत क्षमत सुजान महान मति।
तै गुण गणकी पोत विदित होत संसृत उदधि॥

दो० क्षमाधरै उरनीच लघु सत्य बड़ो जगहोय।
बड़ो क्षमा उर धरतही लहै परम पदसोय॥

सप्त ऋषिन मनकीन्ह विचारा। विधिहरिहरकरबड़अधिकारा॥
को बड़ छोट ईश भवपाला। क्षमाराशि सुखरूप कृपाला॥
करिय परीक्षा भ्रम नशिजाई। आन प्रकार न जानिय भाई॥
तब भृगुप्रति सबऋषिन बखाना। जाइ परीक्षा करहु सुजाना॥
प्रथम मुनीश गयउ अजधामा। सभा उपस्थित भा गुणग्रामा॥
तज्यो कर्म मर्य्यादिक ज्ञानी। कीन्हप्रणाम न विनय बखानी॥
भृगुदिशि देखिपितामह कोपा। कस कीन्हसिशठ बड़पदलोपा॥
तजिसुत धर्म विहाय प्रणामा। सम्मुखचलिआवा क्यहिकामा॥

दो० यद्यपि धाता ज्वलित दुख उर तथापि सुतनेह।
शाप न भाष्यउ रोकिमन जाना मूढ़ अगेह॥

तजि मम सदन बेगि किन जाई। चला ऋषीश्वर सुमति दुराई॥
जान्यसि अर्द्ध क्षमा तन याके। भाष्यउ शाप न मन बश ताके॥
तन रज गुणी विश्व करतारा। शिव थलगाअसकरत विचारा॥
देखि शंभु तट गयउ न सोई। कछुक दूरि पुनि ठाढ़ रहाई॥
शंकरनिरख्यौ नयन उठाई। जाना भृगु अज सुत मुनि राई॥
यदपि कीन्हनहिं दंड प्रणामा। तदपि बन्धु मम बालक वामा॥
मिलन हेत हर उठे समोदा। भेंटन ताहि चहा भरि गोदा॥

बैठि गयउ मुनि भूतल तबहीं। दोउ भुज शंभु पसारेउ जबहीं॥

दो० भूत नाथ मन क्रोध भा हास्य जानि दुख पाय।
लै त्रिशूल चाहत बधन उमा निवारो जाय॥

भागि चला मुनि छत अनुमाना। बह तम काया काल समाना॥
यहि तन क्षमा लेश नहि पाऊं। अब लक्ष्मीपतिभवन सिधाऊं॥
गयउ क्षीरनिधि मुनिविज्ञानी। सोवतदेखि हरिहिरुटआनी॥
निजपौरुष वत उर पद घाता। चौंक्यउ तुरत विष्णु भव त्राता॥
मुनि पद चाप्यउ मन पछिताई। पीर चरण तब भई गोसांई॥
कारणकौन सहा दुख भारी। मुनिनायकसोकहिय विचारी॥
मुनिवर प्रभुहि न उत्तर दयऊ। बन्दि चरण निजमारग लयऊ॥
क्षमाराशि विश्वम्भर एहा। ध्याइय चरण पाय नर देहा॥

दो०॥ माया पति सत गुण वपुष ईश्वर प्रभु स्वच्छन्द।
भजिय सदा तजि काममद हरि पद परमानन्द॥

सो कहा मुनिन सन जाय सकल भेद भृगुमोद मय।
हरषे मुनि ऋषि राय करन लगे हरि भजन सब॥

शील॥

क्षमा राशि जो नर जग होई। चाहिय शील मान जन सोई॥
शीलवन्त जन प्रिय सबही को। आदर करत जानिधन जीको॥
करत शत्रुता कोउ न तासन। बाढ़त नेह बैरहू जासन॥
प्रतिथल ताकर होत बड़ाई। नमत सबहि जो बड़ पद पाई॥
कारण छत अपराधऊ जाको। शीलवान दुख लहत न ताको॥
शील बिलोकत लोभ पराई। क्रोध लजात निकट नहिं जाई॥
मादकता धन पद गुण केरी। तासु समीप न सपन्यऊ हेरी॥
शील स्वभाव धन्य संसारा। कविकोविद सब करत विचारा॥

दो० शील रहित जड़ मनुज तन दुष्ट धर्म रति हीन।
दश दिशि विपति कराल त्यहि बरणत सुकवि प्रवीन॥

जिमि ऐश्वर्य्य सुजनता भूषण। अरु शूरता सुवाक अदूषण॥
ज्ञानाभूषण शान्ति स्वहाई। विद्या की बिभाति नमताई॥
सम्पति अभरण देव सुदाना। तप भूषण अक्रोध बखाना॥
निर्व्याजता धर्म्म आभरणा। सकलाभरण शील कवि बरणा॥
शील रहित छउ लहै न शोभा। विधि शंकर समतदपि सच्छोभा॥
शील समुद्र न घटि बढ़ि भाई। कोटि गंग पद आवहि जाई॥

शील स्वभाव तपस बल पाइय। सहज न शील प्रकाश बताइय॥
नर तन पाइ न होइ अशीला। शील समाज लखौ भव लीला॥

दो० वदत वेद इतिहास शुचि कवि कोविद मुनि सन्त।
शील वन्त नर सदृश नहिं देवराज गुणवन्त॥

जब पांडव दल कुरुथल आवा। समर हेतु बहु किये बनावा॥
तब दुर्योधन निज कटकाई। संग रहित विधि चारि बनाई॥
दुहुंदिशि विजय लालसा लागी। प्रणरत उभय ओर भ्रमआगी॥
कौरवेश मन मंच दृढ़ावा। कहिमिषविजयलहौं करिधावा॥
करत विचार आव मन एवहि। दूत भेजि पूछिय सहदेवहि॥
करि प्रस्थान प्रथम संग्रामा। जयतिपच लीजिय परिणामा॥
शकुनी कहा शत्रु कर भ्राता। शुभ मुहूर्त्त किमि भाषिहि ताता॥
रूपभण यदपि बन्धु अरिकेरा। तदपि शीलनिधि बदिहिसुवेरा॥

दो० असकहि अनुगामी चतुर कुरुपति दीन्हपठाय।
जात भयउ सहदेव पहँ बोल्यो शीश नवाय॥

कौरव पायक दास तुम्हारा। हौं सबविधि सुनु सुबुधि अगारा॥
यह पूंछन आयउं रुचिमानी। कालिह युद्ध होइहि सुनुज्ञानी॥
विजय पराजय होइहि कासू। निर्णय वदिय लहै भ्रमनासू॥
तब सहदेव चित्त अनुमाना। निर्भय तासन बचन बखाना॥
धर्मराज जय संगर धामा। लिख्यो विरंचि सत्य गुणग्रामा॥
सुनि अनुचर बोला करजोरी। कृपा पयोधि विनय सुनु मोरी॥
जो कुरुपति चाहै निजजीती। कहि प्रकार तौ भिरै सनीती॥
को उपाय पुनि प्रथमहि करई। पावै विजय मोद मन भरई॥

दो० तासु बचन सुनि शोचमन बहु सहदेव सुजान।
विजयमर्म अरिदूतप्रति कहिविधि करौंबखान॥

सो० जो न वदत हौं भेद मिटै शील मर्य्याद भव।
यहितन बाढ़ैखेद मृषाबाणि किमि भाषियै॥

मनमहँ तर्ककीन्ह बहुतेरी। भई वृथा कल्पना घनेरी॥
अतिविलखायविधातहिदोषी। ज्यहिरचिशील काल बहुतोषी॥
शील रहित नर नरक निवासै। नीच योनितन द्वितिय प्रकाशै॥
जो प्रयत्न रण विजय बताऊं। तौ किमि जगत बदन दरशाऊं॥
यहिप्रकार बहुयुक्ति विचारी। बोल्योगिरा विजय रणकारी॥
यदपिभेद चाहिय न बतावा। तद्यपि बदव शील उरछावा॥
प्रथम लोहकी शक्तिजो भाई। मध्य समर महिदेइ गड़ाई॥

सो जय लहैन संशय जानो। जाय तात निज प्रभुहि बखानो॥

दो० सुनि आश्चर्यित चरकहा धन्य शीलनिधि तात।
लाभ त्यागि निजजासु बश वद्योभेद विख्यात॥

करि दण्डवत चला सुखमानी। जाइ भूप प्रति युक्ति बखानी॥
श्रवणिततत्क्षण कीन्ह उपाई। रणमहँ सांगि बिहँसि गड़वाई॥
उत सहदेवहि बोलि भुवाला। समर बिजयकर पूंछ हवाला॥
पण्डितकहहौं विजयविधाना। शत्रुदूत प्रति सकल बखाना॥
अब व्यवसायु कौनुहौं भाषौं। रक्षौं गोच जयति अभिलाषौं॥
अमितग्रंथ ज्योतिष रणसारा। खोजत कोविद करत बिचारा॥
शोचत हृदय युक्ति यकआई। तब भूपति प्रति विनय सुनाई॥
जनी सुरोद मँगाइय भाई। रजनिहि रणथल देहु गड़ाई॥

दो० सो उपाय पांडव कियो विजय भई जग जान।
भेद सकल बरणत चतुर बाढ़त ग्रंथ प्रमान॥

सो० लिखनि विरंचि अपार होनहार सोई भई।
रहाशील व्यवहार भूमि शेष सहदेव कर॥

संतोष॥

शीलवान सन्तोषी होई। सद्गुण युक्त जानियै सोई॥
तोषसमान न गुणकोउ आना। बरणत सज्जन निगम पुराना॥
जोनर तोषिक भूतल रहई। सन्त सुजान जगत त्यहि कहई॥
असंतोषि नर तुच्छ अधीरा। जड़मति निलज मूढ़युत पीरा॥
ज्ञान विवेक बीरता बानी। तासु समीपहि जात लजानी॥
सकल सुकृत मूरति सन्तोषा। इत सुख सदन अन्त प्रदमोषा॥
महा सुमति संतोष कहावै। सद्गुण अपर न समता पावै॥
मूरख तोष विवश जनहोई। भूतल मूढ़ न गावै कोई॥

दो० प्रथम बिचारै चित्तनिज प्रभु प्रति पालक एक।
विदित चिपुर तिहुंकाल महँ गहै तासु पद टेक॥

प्रथम क्षीर माता कुचआवै। तत्पश्चात् जन्म नर पावै॥
दशनविहीनजानिदियक्षीरा। पुनि क्यहि कारण होत अधीरा॥
गृह कुटुम्ब कृत कीट कुशाली। वन्दित होवत आपु कुचाली॥
तदपि ताहिभष बन्दि निकेता। पहुंचावत प्रभु सुगम सहेता॥
जीवन वृत्ति दानि करतारा। विनयसनुजकिमिकरियअपारा॥
शैशव दशा रहै जब भाई। पोषण भरण करत को धाई॥

तृष्णा पाप पुंज तब नाहीं। अब कस वर्त्ति रही मन माहीं॥
भूमिपाल कहँ रंक समाना। क्षणमधि करत पुराण बखाना॥
दो० अमित दरिद्री नीचजन ताहि करे महिपाल।
कहा तजे संतोष भा सब कर तब गोपाल॥
उद्दालक यक मुनि विज्ञानी। आतम ध्यान निरत गुणखानी॥
उर संतोष बिटप त्यहि जामा। प्रौढ़ भयो युत पूरण कामा॥
त्यहि प्रण कीन्ह मास षट बीते। भोजन पान करों सुखहीते॥
सदा वृत्ति मुनि कर यह भाई। गत षट मास अन्न रस खाई॥
एक दिवस मुनि गत षट मासा। भोजन रच्यो क्षुधा तन त्रासा॥
पाक परोसि पाच महि धारा। निर्मल जलयुत चहत अहारा॥
ताही काल अतिथि यक आवा। देखि महा मुनि आतुर धावा॥
अति आदर सत्कार समेता। लै आवा मुनि ताहि निकेता॥
दो० आसनदै स्वागत बचन पूछे ऋषि सह प्रेम।
निज वृतान्त दण्डी सकल भाष्यउ पूरब नेम॥
सो० यती कहै सुनु तात महा क्षुधित अरु तृषित हौं।
ज्ञान बिरति बिसरात बिनु पाये भोजन सजल॥
सुनि उद्दालक बड़ सुख पावा। तुरतहि पाक पाच लै आवा॥
अतिथिहि भोजनसुरुचिकराई। सह संतोष दीन्ह जल आई॥
तृप्त भयउ जब यती सुपाई। तब ऋषिवरहि कहा सुनुभाई॥
तव सम संतोषी भव नाहीं। मुक्ति रूप प्रगट्यउ जग माहीं॥
ततक्षण हरिगणसहितबिमाना। मुनि थल बचन सुबानि बखाना॥
चलिय तात बैकुंठ निकेता। नाना भांति पंथ सुख लेता॥
तुम संतोष रूप ब्रत धारी। हरिपुर बसिय सदा अमटारी॥
यान चढ़ाय मुनिहि लै गयऊ। तोष प्रताप मोक्ष पद लयऊ॥
दो० बड़ प्रताप संतोष भव ज्यहि तन होवै तात।
तासु बड़ाई देव मुनि करैं सदा लखि गात॥

सत्य॥

संतोषी जब नर तन होई। सत्य स्वभाव गहै जग सोई॥
जप तीरथ ब्रत पाठ बिचारा। सत्य समान न कोउ संसारा॥
बड़ आचार वर्ण कुल बानी। सत्य बिहीन मलीन लखानी॥
सतवादी सादर सब ठामा। होत निरादर धौं नर बामा॥
ज्यहि तन सत्य समोद निवासा। ताकहँ दुख न कतहुं दश आसा॥

अबुध मूढ़ जड़ नर कुल हीना। सत्य गहे सुख लहत प्रवीना॥
कौनहुँ काल सत्य क्षय नाहीं। बूझि दीख बहु ग्रंथन माहीं॥
ज्ञानी गुणी साधु मत लेखा। सत्य सदृश कोउ धर्म न देखा॥

दो० सकल प्रकार अचिन्त भव सतवादी जन जानु।
दुखित पापमय दिवसनिशि अनृतवादि अनुमानु॥

नाम युधिष्ठिर पाण्डु कुमारा। सत्य कथन प्रण दृढ़ मन धारा॥
भूलिहु सो न मृषा बच भाषै। प्रति क्षण सत्य भाव शुचि राखै॥
एक दिवस की अद्भुत बानी। सुनहुँ चतुर जन सुमन कहानी॥
योगीपाल नागपुर आये। आगम सुनत पाण्डुसुत धाये॥
अभि बन्दन करि लाइ निकेता। विविधि प्रकार अर्चि सुखलेता॥
कछुदिन तहँनिवसे गिरिधारी। देखि रूप प्रमुदित नर नारी॥
चर्चा चली सत्य की जबहीं। पूछि युधिष्ठिरसों हरि तबहीं॥
मिथ्या बचन न तुम मुख लावो। सदा सत्यमय बाणि सुनावो॥

दो० साधु स्वभाव प्रवीन मति विदित भूप संसार।
प्रश्न एक हम करत हैं उत्तर कथिय भुवार।

जन्म दिवस ते अब लगु भाई। तुम देखी को नारि सोहाई॥
सब गुण मिलित रूप की खानी। धर्म शील मय पिकबर बानी॥
मृगलोचनिविधुवदनिमनोहरि। गजगतिआनहुअंगनिसो हरि॥
सुनि महीश उत्तर यह दीन्हा। सुनियश्यामममबच छलहीना॥
निज माता सम नारि न नाता। देख्यों जन्म पाय यदुजाता॥
भूप गिरा श्रवणत हरि जाना। सत्य सिंधु नृप अछल सुजाना॥
बिहसि छल नृप कंठ लगावा। मांगहु तात आजु मन भावा॥
जो नर सत्य भाव चित धारे। सदा बसत सो हृदय हमारे॥

दो० जोरि बाहु सुख नृप कहो सुनिय दया कृपार।
बिपति काल कुसमय परे करिय सहाय हमार॥

सो० एवमस्तु कहि श्याम बहुत प्रशंस्यो भूप कहँ।
तेहि कारण प्रतिठाम तासु बिपति नाशी सदा॥

देखिय सत्य प्रताप अपारा। जेहि वश भयउ त्रिपुर करतारा॥
जानि अमोल बस्तु अस प्रानी। त्यागत किधौं मूढ़ता सानी॥
मिथ्या वादी जो संसारा। अन्त शमनपुर तासु अगारा॥
कालनेमि छल रूप बनाई। पवन तनय मग रोकसि जाई॥
जानि भिक्षु मुनिपग शिरनावा। तेहिखलआशिष सछलसुनावा॥
अरु बहु मिथ्या बचन बखाने। वायु जात निज मनहि न आने॥

जानिकपटमुनि ततक्षण मारा। अयश पाय यम सदन सिधारा॥
यहिहितसुजनतजियछलबानी। भाषिय सत्य न होइ गलानी॥

दो० वेदस्मृति बहु ग्रंथ मत हौं देखा निज नैन।
या भव नर तन पाय बुध सत्य तुल्य कुछ हैन॥

परोपकार॥

सत्य वाद जो नर उर धारै। करै विशेषि सो पर उपकारै॥
सन्त सुजान वेद विद जोई। पर हित हेतु धरे नर सोई॥
पर उपकार सरस भव ताता। आन धर्म नहिं रचेउ विधाता॥
सो जग जीवन मुक्त सुकर्मा। जो स्वभाव लिय पर हितु धर्मा॥
निज स्वारथ रत सकलजहाना। पर स्वारथ हित साधु सुजाना॥
तप साधन जप पाठ अपारा। वृथा लखिय तजिपर उपकारा॥
पर पीड़ा सम पाप न कोई। पर हितु सरिस धर्म नहिं होई॥
पर हित स्वर्ग द्वार की ताली। यहनिजमुखभाष्यो अहिमाली॥

दो० यहि जग धर्मन अपर कोउ परउपकार सकान।
अरुन महा अघ देखियत परपीड़ा सम आन॥

सो० अघ गण गहन अपार परहितु पावक भस्म कर।
नर तन धरि संसार दंड न दीजिय जीव कह॥

पर हित हेतु साधु अवतारा। पर पीड़ा लगि खल तन धारा॥
लखि पर हानि दुष्ट मुद मानै। पर हित हेरि महा अघ जानै॥
कोटि कुकर्म पाप नशि जाई। पर उपकार पुण्य फल पाई॥
किमि अघ रहै तासु के अंगा। न्हात जोनित भव परहितु गंगा॥
अमित गुणज्ञ बुद्धि के सागर। कहत न यहि सम कर्म उजागर॥
हौं निजमनमहँ दीख बिचारी। सत्य आन सुख मुक्ति हमारी॥
जेहि कृत अन्य पुरुष सुख पावै। अरु आपहु हरिलोक सिधावै॥
कस न करै सो काज प्रवीना। यह सिद्धांत धर्म मत चीना॥

दो० इहां उचित इतिहास यक कहौं सुनौ चितलाय।
मगध राज प्रति कृष्णजू कही समय यक पाय॥
सुनु नरेन्द्र हरिचन्द्र नृप भयो अयोध्या माहि।
पर उपकारी साधु मति रहा जगत यश ताहि॥
एक समय नृपता विषे परयो दुकाल कलेश।
प्रजहि जियायो देशपति बिक्रय करि निज देश॥
रंक समान भयउ धरनीशा। सकल दुखितभे पुर धन रवीशा॥

तौने काल परीक्षा कारण। विश्वामित्र सुऋषि भव तारण॥
जाइ भूप प्रति कह धन देहू। कन्या दान तुल्य फल लेहू॥
सुनतहिमुदितमहिपमनभयऊ। सर्वसु निज आलय कर दयऊ॥
तोषित भो न सुऋषि वशमाया। बेंचि भृत्य गण धन दिय राया॥
तदपि न संतोषउ मुनि ज्ञानी। भूपहि कहा सुनौ वर बानी॥
स्वल्प द्रव्य मम काज न होई। याँचौं काहि न दीखत कोई॥
तुम प्रसिद्ध धरमातम दाता। सुनि सुलोक प्रफुलित ममगाता॥

दो० सुपच एक धनवान है जो नृप आयसु देऊ।
ताहियाँचिद्रयहिलहौंमनविचारदृढ़एऊ॥

यहि कृत आवत जीव गलानी। याँचौं खलहि याँचि नृप दानी॥
मुनिमुख बचनसुनतहरिचन्दा। चाण्डाल थल गे सानन्दा॥
देखिनृपहि आयऊचाण्डाला। करि प्रणाम तेहि पूछहि बाला॥
गहने राखु बर्ष लगु मोहीं। दे धन अवशि पूछि मुनि सोहीं॥
नरपति मम सेवा खल कर्मा। केहि प्रकार पुरवौ वर धर्मा॥
आरत मय बाणी नित बोलब। मम आज्ञा ते बाह्य न डोलब॥
राजस तामस तव उर बासी। केहि विधि सो देहौ नृप नासी॥
नृपमणि तेजादित्य समाना। दास कर्म मम अशुचि महाना॥

दो० मम गृह की रक्षा करौ मृतकन को कर लेऊ।
प्रीति न मानौ काऊ की हमरे कारज एऊ॥

जोपै यह कारज नृप होई। तौ धन देउं कहै मुनि जोई॥
बन्धक राखौं बर्ष प्रयन्ता। सुनि बोल्यो चोणिप बुधिवन्ता॥
जस सेवा तुम्हार गृह केरी। तस हम करब अमिष रुख हेरी॥
द्रव्य सुपच दीन्ही तत काला। जेहि प्रमाण माँग्यो श्रुतिपाला॥
निजनिकेत गे ऋषि धनग्राही। भूप सत्य निज हृदय सराही॥
श्वपचा यसवत कृत नृप कर्मा। नीति विदित जस सेवक धर्मा॥
विधिवश रोहिताश्वनृपजाता। तदा काल बश भयउ अघाता॥
मृतक पुत्र लै भूप कलत्रा। गई मसान भूप रह यत्रा॥

दो० चिता विरचि कीन्हा चहति संस्कार जल जात।
तबहि रसाधिप आइ कर माँगत भो रुट गात॥

कठिन बिलाप करयो सुनि रानी। देखु क्षमाधि हृदय अनुमानी॥
रोहिताश्व यह सुत प्रभु तोरा। मरत तिमिरछायो चहुंओरा॥
मोरे द्रव्य न जो कर देहूं। पुत्र क्रिया करि गृह मग लेहूं॥
जीरण पट मम शिर धन एही। कर महँ नाथ लीजिये तेही॥

सर्वसु दया राशि दिय दाना। बच्यो सूनु सोउ हर भगवाना॥
पर बश नारि स्वामि सिवकाई। बिनु कर कर्म करत कठिनाई॥
प्रीति करत मम सत्य नशाई। गत सत जीवन धिक् मनुसाई॥
रानी सारत सुनि प्रण राजा। कुसमय महादुखित गत लाजा॥

दो० बस्त्र उतारन हेत नृप रानी स्वकर पसार।
कम्पितभेतिहुंधामतब निरखिसत्यव्यवहार॥

तस्मिन् अवसर सुभग बिमाना। हरि इच्छा आयो तेहिथाना॥
धन्य गिरा सुर नाक पुकारे। प्रगटेउ प्रभु स्वतंत्र तन धारे॥
जीव दान हरि सुत कहँ दयऊ। मम पुर गमनौ आयसु भयऊ॥
जोरि हाथ नृप बिनय बखानी। आरत हरण सुनिय मम बानी॥
प्रगटेउ प्रभु छतत्र अनकाया। तव पद परसि भयउ गत माया॥
बिनु चाण्डाल न जाउं कृपाला। यह थल त्यागि देव जन पाला॥
नृपति अभिप्रियहृदयबिचारी। कह सह सुपच होऊ नभचारी॥
पुर जन हितू तजें दुख होई। मम बिनु दुखित होइ सब कोई॥

दो० बिहँसि कहा भगवान तब जाऊ सपुर मम धाम।
अवध सहित हरिचन्द्र तब मुक्त भयउ गुण ग्राम॥

सो० पर उपकार प्रताप पुर समेत मोच्यो नृपति।
मंगल संसृत ताप बिन प्रयास छूटो सकल॥

साहस

जोनर पर उपकारी होई। साहस अवशि धरै उर सोई॥
बिनु साहस न होत उपकारा। लघुधी भ्रमित सदा संसारा॥
जो साहसी पुरुष जग देखा। सो उपकारी लखो विशेषा॥
बिन साहस्य न बीर बड़ाई। ता बिन कुछ न मनुज मनुसाई॥
जो जन सुमन बिबेक बिचारी। ज्ञान निधान गुणी उपकारी॥
जपी तपस्वी पाठ प्रधाना। साहस रहित न सो जग जाना॥
कित आलस्य लही प्रभुताई। प्रति थल भवतल होत हसाई॥
बड़ भागी साहस बश प्रानी। यत्र तत्र इतिहास बखानी॥

दो० मानुषबपुलहि बिबुध जन साहस तजियन तात।
जासुबिबश तिज धाम महँ पद अति ऊंच लखात॥

सो० कादर यहि संसार महामलिन अपयश सहित।
तजि कादरता द्वार साहस पुर निवसिय सुचित।

जासु हृदय साहस्य बिराजा। तासु सहाय करत ब्रजराजा॥

नरक निवास आलसी पावै। कौन उपाय देव पुर जावै॥
जे पण्डित भूतल तन धारी। आलस कातरता तिन हारी॥
नहिं सोहात साहस्य बिहाई। करत अनेक यतन तन पाई॥
नीचहु लहत सुपद साहस बश। शत रंजी पायक मंची यश॥
सन जिमि आपन मूल कटावै। तन सड़ाय पुनि चर्म खिचावै॥
रोम रोम ऐंठनि सहि लेवै। पद प्रहार मुगरा दुख सेवै॥
पुनिप्रति अंग कटाय छनावै। कागद रूप महा दुख पावै॥

दो० सो पुराण आगम बनै नावै शीश नपाल।
मुनिजन सेवैं प्राणसम धनिसाहसचैकाल॥

असुर एक वृत्रासुर नामा। प्रथमहि भयो सुनौ गुण ग्रामा॥
तेहिमन बचक्रम शिव आराधेउ। इन्द्रियनिकर विषयते साधेउ॥
बिपुल काल तप कियउ कराला। त्यागेउ सकल मनोभवजाला॥
देखि उग्र तप हर आनन्दे। गये निकट तेहिप्रभु पद बन्दे॥
मांगु सूनु मन भावित आजू। धन बल भूमि देव पुर राजू॥
कर संपुटित बंदि पग बोला। कृपासिंधु रण होऊं अडोला॥
सुर नर नाग त्रिपुर जे अहहीं। अस्त्रशस्त्र अरिहनकर गहहीं॥
तिन कर होइन काल हमारा। एव मस्तु शिव बचन उचारा॥

दो० सुरुचि मांगि वर समर बल जिते नाग नर लोक।
गयउ सकोप सुरारि पुनि सुमन अमर पतिओक॥

अखिल दिवौकस मारि भगाये। तजि थलचिदशदशौदिशिधाये॥
करत विचार सुपर्व सुजाती। केहि बिधिमरै असुर सुरघाती॥
अजपुर जाइ अमर सुर चाता। कही पितामह प्रतिसब बाता॥
सकल देवतारत कमलासन। अधम निपात होइ कर कासन॥
विधि कहन्नृपदधीचि पहँजाहू। जंघ अस्थि लावौ छत काहू॥
ताशर अमर नाथ खल घातौ। बड़ कलेश पावैं सुर नातौ॥
चलि सब देव अवध पुर आये। नृपहि सकल दुख रोइ सुनाये॥
जो निज जंघ अस्थि नृप दीजै। तौ बड़ सुयश भूमि तल लीजै॥

दो० पर उपकारी साहसी नृप दधीचि विख्यात।
जंघ अस्थि दीन्हों तुरत करि साहस निजगात॥

तेहि शर अमर राज रिपु मारा। महा दंड देवन कर टारा॥
इत दधीचि महि भोगि समोदा। लहिसुलोकलोकहिचहुकोदा॥
अन्त बिमाना रूढ़ित भयऊ। बिन श्रम विष्णुधाम कह गयऊ॥
देखहु साहस कर प्रतापू। मिट्यौ सकल नृपता छत पापू॥

बिन जप यज्ञ ज्ञान तप राजा। हरि पुर बस्यौ देश बपु साजा॥
जानिसुकृत अस चतुर न त्यागिय। विषयीवश न मोहमगलागिय॥
शुभ लक्षण जेतिक संसारा। साहस सबकर भव श्रृंगारा॥
नर साहसिहि सुरेश सकाहीं। बिदित कथा बहुग्रंथन माहीं॥

दो० सिंधुकोट चहुंपास दल अगणित नृप परिवार।
राम लषण साहस्य बल मारिकिये सबछार॥
मंगल कातरता तजिय साहस राखिय चित्त।
दुखरूपी यहि जगत महँ सुख पाइय नवनित्त॥

धैर्य्य॥

जोनर साहस चित्त बसावै। सो धीरज बिशेषि उरलावै॥
बिन धीरज न होत सत्कर्मा। जप तप व्रत तीरथ वरधर्म्मा॥
जे अधीर नर भवतल भाई। ते जड़ कतहुं कि लहत बड़ाई॥
वेद पुराण ग्रंथ मत सारा। धीरज सुकुल कर्म्म अधारा॥
जासु वपुष धीरज बिनलोका। सो जन सबदिन रहत सशोका॥
धीरवान नर दीन धनाधी। ताहि न ग्रसत विषय भवव्याधी॥
काहू थल न सहत अपमाना। रणनृप सदन करत तपदाना॥
सादर भूतल करत बसेरा। लोक सुलोक बढ़त मतमेरा॥

दो० ज्यों चातक धीरज शरण पावत सुतफल तात।
रम्भा धीरज विवश महि कर्पूरित सबगात॥

बीरव्रती रण धीरज पाई। रिपुबधि बिजय लहत रवताई॥
आतप सहत भूमिवसु मासा। पोषत पावस मेघ शुभासा॥
दृढ़मति मनुज पुण्यतन होई। पूतन द्वितिय भवस्थल कोई॥
जिनकीबुधिधीरजतजिदीन्हा। तिनधरि देह कहा फललीन्हा॥
जिततितक्षुद्रक्षुभितमहिडोलैं। प्रतिथल दीन बचन जड़बोलैं॥
सरत न काज न होत उबारा। अथिर करत अगणित उपचारा॥
कूर कुटिल पदवी क्षिति छावैं। आदर विगत दशौदिशि धावैं॥
पूछत कोउ न अधीरज जानी। प्रतिगृह होत मानकी हानी॥

दो० यहिकारण धीरज धरिय तजिय अथिरता भाव।
सुकृती भव सादर रहत जाकर धीर स्वभाव॥

करण भानुसुत जग विख्याता। धीरमान नैमित्तिक दाता॥
अचला अचल बुद्धि बड़ज्ञानी। भूतल विदित दान कर्मानी॥
याचक बिमुख जाय नहिंपावै। परमधीर नृप सुयश बढ़ावै॥

मागध सूत बन्दि गुणगावैं। रबिस्तुत कीरति सुरुचि सुनावैं॥
नारद एक समय नरलोका। आइसुना नृप सुयश अलोका॥
अत्याश्चर्य्य बिवश मुनिनायक। गयेद्वार कहि हरिगुण गायक॥
भेंटिप्रभुहि निजविस्मयभाषा। मोमन श्याम एक अभिलाषा॥
पूषण तनय दान सन्माना। भवप्रसिद्ध युत धीर प्रमाना॥
दो० दुष्ट कृतघ्नी बन्धु अरि दुर्योधन को मीत।
सोकिहोइदातासुमति इथाविदितजगगीत॥
करिय परीक्षा तासु प्रभु मिटै मोर संदेह।
विहसि कृष्णकह देवऋषि निंदतहै कृतएह॥
साधु रूप दाताहि न दोषै। सुनिशुभ कर्म गहै सन्तोषै॥
यहिकारण विचरहुमुनिजाई। किये परीक्षा कौनि बड़ाई॥
धीरमान दाता हरिजाता। भ्रमिहि न करत परीक्षा ताता॥
तब देवर्षि कहा प्रभुपाहीं। बिना परीक्षा मोहिं कलनाहीं॥
जानिदास अभ्यंतर भावा। तुरतहि प्रभु द्विज रूप बनावा॥
नारद संग चले हरखाई। नागनगर पहुंचे प्रभुजाई॥
प्रथमप्रहरकरणहिचलियांचा। दीजिय दान मोरमन रांचा॥
तन धन भूमि सुता सुतजाया। यांचिय बिप्र देहुं मनभाया॥
दो० क्षुधा वलित नरनाह हम भये पंच उपवास।
मनुजमांस भष मोरनित मिलत न सो अनयास॥
बहु महीप यांचे महिपाला। काहूं कीन्ह न मम प्रतिपाला॥
कोउकह असुररूपद्विजदोऊ। पुरब बाहिर काढ़ा नृपकोऊ॥
प्रजासूनुकोउ पकरिबोलावा। मम अहारहित सुमन पठावा॥
काहू भनेउ समर थल जाहू। अभिमत भोजन द्विजवर खाहू॥
प्रणहमार दाता सुतहोई। निजकरदानि सदृढ़ बधिसोई॥
पाकविरचिमोहिंसुरुचि जिमावै। शोक ताप कछु मनहिंनलावै॥
जोअस करण करौ दृढ़ताई। तौहम भोजन करैं अघाई॥
जोनहोइ यह तौ नरनाहा। गहैंपंथ निज युत उत्साहा॥
दो० तरणि तनय धीरज सहित कहबैठिय दृढ़गात।
निजसुत बधि रचिपाकहम भोजन देहुब तात॥
करि आसीन बिप्रबर बासा। अन्तापुर गमनेउ अनयासा॥
बामहि बोलि इतान्त सुनावा। सुनत तासुउर बड़ दुखछावा॥
पुनिधरि धीर कहिसि सुनुनाथा। दीजिय दान बढ़ै जग गाथा॥
पुनहि नृप सबकथा सुनाई। बिश्वसेन बोल्यो सुखपाई॥

अन्त वन्त तन पितु संसारा। विधिसम आयुनकालउबारा॥
पुचशरीर पिता हित लागै। भव भव फलपावै दुखभागै॥
बेगि कृपालु राखुप्रण आजू। सुत त्रिय धनबिन धर्म कुसाजू॥
सुत उछंगि निजकंठ लगावा। सत्वर भूप द्वार चलिआवा॥

दो० तिनके सम्मुख लायनृप गहिकर तीव्रकृपान।
बधन चहत तत्कालहीं बोले श्रीभगवान॥

बिहसि बिप्रकह सुनौ भुवारा। बिनु संकल्पित असुर अहारा॥
दम्पति ग्रन्थि बांधिके आवा। करि संकल्पसमोद जिमावा॥
नृपकहिभल रनिवास सिधावा। दूहांश्याम नारदहि बुझावा॥
दृढ़मति भूप न चलिहि चलाये। कोफल मुनिसुत बध करवाये॥
बेगि तजिय यहथल ऋषिराई। नतबड़ि हानिहोइ दुखदाई॥
नारद सहित गुप्त हरिभयऊ। पलटिकरणत्रिययुत तहंगयऊ॥
नहिं तहं बिप्र चिन्ह नृपदेखा। उर उपजी सन्ताप विशेषा॥
अहह दैव ममधर्म बिनासा। गयेबिप्र युत क्षुधा पियासा॥

दो० तस्मिन् अवसर गगन सुर बाणि सुनाई आय।
धन्य करण दाता धरणि अवध रुधीर नृराय॥

सो० नारद स्यौ भगवान कीन्हपरीक्षा तोरिनृप।
गये सो निजवरथान रहो तुम्हारे प्रणनृपति॥
अंतकाल यदुराय तोहिं सुरचि देहैं दरश।
सब अघजाय नशाय स्वर्गबास निवसे नृपति॥

दो० समर गिरौ जब सूरसुत तबप्रभु सम्मुख जाय।
दयो दरश दृढ़ता विवश मुक्त भयउ नरराय॥

सत्कार॥

जो जन धीरवान संसारा। करै सोजन आदर सत्कारा॥
सबगुण वलित मनुज अभिमानी। तुच्छ बुद्धि जानत नरज्ञानी॥
ऊंच नीच कोऊ किन आवै। साधुहि सबकर आदर भावै॥
काहू को न निरादर कीजिय। शुभआचरण सुमनयहलीजिय॥
आदर देखि शत्रु हरषावै। नहिँ आश्चर्य्य जो बैर दुरावै॥
जाकर करिय सुरुचि सत्कारा। तनमनबचन सोमित्रतुम्हारा॥
प्रियतम करत निरादर ताता। शत्रुभाव मानत विख्याता॥
जिनके उर प्रभु शुभगुण दीन्हा। तिनआदरधनप्रथमहिलीन्हा

दो० विद्याधन पदवी सुवल पाय तजिय अभिमान।

सबकर हितुमानिय जगत होइसदा कल्यान॥

सो० जेपद पाय महान करत निरादर नरनको।
ते न चतुर बुधिमान सकल कहत भे मूढ़मति॥

सीपी यदपि जलधि निवसाहीं। जलकी तृषाताहि कछुनाहीं॥
तदपिस्वातिजल अतिथिबिचारी। सेवत हृदय होत सुतबारी॥
जलमयसदा उदधि नहिंहानी। अरु न चाह जलकी बरबानी॥
तदपि बिन्दु जल जब त्यहि परई। सादरराखि अचलत्यहिकरई॥
प्रभुहि न नेकहु सेवाचाहा। राखत तदपि शरणगहिबाहा॥
चतुर शिरोमणि सो जगज्ञानी। जो आदरै सुजन बर बानी॥
नतबड़ मूढ़ यदपि कबि तूला। विषय विलाश ज्ञानपथ भूला॥
नरतन देवरूप महि जानिय। ताहिपायशुभगुण उरआनिय॥

दो० करिआदर सत्कारनर सबकर प्रियतम होत।
लहत सुकीरतिभूमितलविदितहोतनिजगोत॥

सो० सुनौ एक इतिहास जो श्रवणत उपजै सुमति।
नशै मूढ़ता भास मान निरादर भगिचलै॥

द्विजबर एक सकल गुणज्ञाता। सुमतिसुजान जगतविख्याता॥
पण्डित विष्णुभक्त मन बानी। शुभ आचरण धनी विज्ञानी॥
जगसुख अखिल ताहिसुनुभाई। काहुबिधि न काल कठिनाई॥
पै विधि ताहि न संतति दीन्ही। भाल अवंश रेख निजकीन्ही॥
एकदिवस ब्राह्मणी बखाना। सुनौनाथ मम बचन अयाना॥
बिनसुत भवसुख दुख की खानी। गावत वेद संतमुनि बानी॥
कोउ उपाय कीजै द्विजनाहा। उपजै पुत्र मिटै दुखदाहा॥
महिसुर नारि बचन सुनिकाना। मनचिंतमितविपुलअनुमाना॥

दो० वेदशास्त्र व्यवसायजे कहेपुत्रहित सोइ।
कियेबिप्र बहुबार पै प्रकटपुत्र नहिंकोइ॥

सो० शोचत द्विजमनमाहिं वेदकर्म निष्फलभये।
अबउपाय कोउनाहिं रहाअवंश प्रशंसजग॥

सुरमुनि एकसमय तहं आयउ। भूसुरतिनहिंबन्दिसुखपायउ॥
विस्मित विप्र बिलोकि कृपाला। पूंछउ कोमल बचन हवाला॥
कारण कौन तात दुचिताई। भाषिय बेगिय कानि दुराई॥
बन्दिचरण ब्राह्मण कहताता। बिनुसंतान न मोहिं सुहाता॥
निगमागम जे बहेउपाई। अमितभांतिकरिथकेउगोसाई॥
तब नारद द्विज करकर लीन्हा। रेखा निरखि महादुख कीन्हा॥

तुम्हरे सुत न लिखा करतारा। वृथा करत महिसुर उपचारा॥
अस कहि देव ऋषीश्वर गयऊ। विप्र निराश बंश ते भयऊ॥

दो० दम्पति मन यह मत करो गृह सम्पदा अपार।
अन्त काल छूटिहि इहाँ करि लीजिय सत्कार॥

सो० करत जो नर सत्कार ताकहँ जग दुर्लभ न कछु।
यह सिद्धान्त विचार सुना गुणिन मुख प्रथम हम॥

सबकर आदर भाव समाना। दम्पति समुद करैं बिधि नाना॥
अद्भुत चरित दिवस यक भयऊ। कोउ हरिदास नगरत्यहि गयऊ॥
शीतकाल निशि बहै बतासा। विकल साधु हिमकी तन चासा॥
तेहि पुर उच्चश्वरहि पुकारै। है कोउ सन्त करै उपकारै॥
कण्डा पाँच हमहिं कोउदेई। पांच पुत्र फल ताकर लेई॥
साधु शब्द सुनि द्विजबर धावा। चरण बन्दि निज आसन लावा॥
स्वागत पूछि सु आसन दयऊ। पावक बारि तपावत भयऊ॥
अरु कह जौन चहौ सो लेहू। यह थल साधु जानि निज गेहू॥

दो० सन्त कहा सम्पति बसन नहिं चाहिय कछु तात।
धुनी चहत हौं तौन तुम दीन्ही सानंद गात॥

सो० वचन अन्यथा नाहिं सुनु भूदेव प्रमाण मय।
पांच पुत्र गृह माहिं उपजहिं तव संशय नहीं॥

साधु प्रात निज मारग लागा। द्विजवर उरसि सून अनुरागा॥
काल पाय उपजे सुत पाँचा। सन्त वचन किमि होइ असाँचा॥
सुरमुनि कतहुं बहुरितहँ आये। बालक देखि हृदय हरषाये॥
पूंछिनि द्विज सब कहाहवाला। सुनि सुनि चकृतउठे ततकाला॥
जाइपितामहिसुधि यहदीन्ही। विधिसुनिमनचिन्ताबड़िकीन्ही
जासु भाल हौं सून न लेखे। ताके धाम पञ्च सुत देखे॥
तजिहौं सृष्टिकरण अधिकारा। लेख अन्यथा भयउ हमारा॥
ताही काल गगन भइ बानी। सुनों विधाता तजौ गलानी॥

दो० अमुक साधु मस्तक लिख्यउ पंच पुत्र को दान।
दिये ताहि चिन्ताकहा लेखतुम्हार प्रमान॥

सो० तबविरंचि सुखपाव जानि आपनो लेखफुर।
देखहु आदर भाव लहे अपुत्री पुत्र बहु॥

दान॥

जो स्वाभाविक कृत सत्कारा। चाहिय तौ दानित्व अपारा॥

दाता करत अमित सुख भोगा। पाप रहित भाषत बुध लोगा॥
दान समान न गुण महि दूजा। जप तीरथ यज्ञादिक पूजा॥
दान संग सब शुभ गुण शोभा। नशत समस्त आवतै लोभा॥
दाताबिनु श्रम भवनिधि तरई। संकट योनि बहुरि नहिँ परई॥
दान त्रिविधिश्रुति भूमिबताये। सात्विक राजस तामस गाये॥
उत्तम मध्यम अधम त्रिदाना। त्रिधा कलौ जीवन कल्याना॥
शुचिस्थान जस तीरथ यागा। निजकर दान देइ तजि रागा॥

दो० अथवा द्विज गृह जाय बुध सुदिन सु अवसर पाय।
दान वेद विधि सात्विकी उत्तम जानिय भाय॥

सो० देत दान अलसात दूसर कर जो दिवावई।
राजस मध्यम ख्यात दान सोइ संसार महँ॥

कुसमय कुथल योजना कीन्हे। दानदेइ भुकि क्रोधहि लीन्हे॥
तामस अधम भनत सो दाना। जेनकेन बिधि क्षत कल्याना॥
क्षतयुग ज्ञान ध्यान सब पूरे। तृष्णा पात जात नहिँ धरे॥
तरत मनुज करि आतम ध्याना। सो कलि दुर्लभ कर्म सुजाना॥
चेता विपुल यज्ञ मन बानी। करि भव तरत चतुर विज्ञानी॥
कलियुग सो उन देखिय ताता। दशदिशि अघ समूह दरशाता॥
द्वापर ध्याय जलद हरि चरणा। संसृत जलधि होत नर तरणा॥
इत मन माया मोह भुलाना। करत कौनु नारायण ध्याना॥

दो० ज्ञान यज्ञ नहिं ध्यान कलि भुक्ति मुक्तिदातार।
काहु बिधि कीन्हे सुखद एकै दान बिचार॥

सो० केहि न दान करितात लही बड़ाई भूमितल।
चारौ युगन लखात दान प्रधान सुकर्म महँ॥

जो कुछ दान देइ नर ज्ञानी। अर्पै हरिहि कर्म मन बानी॥
परमारथी दान सो जाना। विदित वेद इतिहास बखाना॥
स्वारथ लागि दान क्षत जोई। ताकर फल तनअक्षतहि होई॥
रोग विवश तन आपु निहारी। अथवा आन हेतु उर धारी॥
गो अन्नादि दान करवावा। अन्त तासु फल वेद न गावा॥
दाता कतहुँ न होत दुखारी। इतउत कीरति सुकुल पसारी॥
दाता जानि काल गण लाजै। रिपु समूह रण भू तजि भाजै॥
व्रत तीरथ जप संयम जेते। दान सदृश भव लखिय न तेते॥

दो० दान कर्म सब सुकृत गुरु करत साधुजन जानि।
मुक्ति लहत अनयास जग सत्य लीजिये मानि॥

सो० शोभा धनकी दान चाहिय दाता धनिक भव।
कृपण मूढ़ अज्ञान अन्त बसत अध योनि महँ॥
अजामील यक व्यसनिक भयऊ। कबहुन सुमन नाम हरिलयऊ॥
निशि बासर बेश्या रस रागा। द्वितियवस्तु नहिँ जान अभागा॥
धर्म नाम सुनि चलत पराई। प्रतिक्षणकरत रमणिस्यवकाई॥
वेश्या जस आज्ञा अनुसारै। करै न अनुचित उचित बिचारै॥
गणिका एक दिवस कह जाहू। गुल्म प्रसून हेतु मम नाहू॥
शय्या बिरचि सैन सुख लीजिय। भोग समय चित तापर कीजिय॥
गुल्मोपवन तुरत चलि आवा। तोरत फूल मोद मन छावा॥
कण्टक बिपुल सघन तरु शाखा। तामहँ सुमन एक भल आखा॥
दो० लहि दुख कण्टक घुसि लता तारयो फूल समान।
आरत मन कर काढ़ि कह अब कीजिये पयान॥
छूटि प्रसून लता घन परऊ। कौनहुं यतन न कर पुनिपरऊ॥
मन पश्चात्ताप करि भारी। बोला दुष्ट सुमति चित धारी॥
कृष्णार्पण कीन्हो यह फूला। जो खसि परयो गुल्म तरु मूला॥
जग बल्लभा पास पुनि जाई। दीन्ह प्रसून मोद मन लाई॥
यहि प्रकार बीते कछु काला। भयउ मृत्युबश सो अघमाला॥
यमचर दण्डक तट लै आये। कुकृत कर्म सब बरणि सुनाये॥
सूरज कहा पुण्य कृत कोई। कियउ न दियउ जन्मसबकोई॥
एक फूल यहि हरि हित त्यागा। त्यहि फलजाइ दिखावहुबागा॥
दो० गयउ दूत लै बाटिका तब त्यहि मूंदे नैन।
दर्शन फल अर्पेउ हरिहि कह्यउ प्रसन्नित बैन॥
सो० पलटि दूत यम पास कह वृतान्त समोद चित।
महिषध्वज सङ्कलास भण्यौ दिखावहु देव बन॥
यम अनुचर लै सुरपुर गयऊ। नन्दन बिपिन दिखावत भयऊ॥
तब त्यहि चक्षु मूंदि सुख तासू। अर्प्यउ हरिहि जानि दुख नासू॥
पुनि गण ताहि यमस्थल लावा। समाचार रविसुतहि सुनावा॥
दण्डकसुनि इमि बचन प्रकासा। सुमन सेज यक निशि दे बासा॥
पुष्प सुगन्धि बिरचि परयङ्का। युत उपबरह गेडुआ अङ्का॥
सादर अजामील कहलाई। कहा बसौ निशि मन सुखपाई॥
सुखशय्यातिन हरि हित त्यागा। बैठि यकान्त भजन हरि लागा॥
पुण्य प्रताप मिट्यो अज्ञाना। बूझ्यउ परमतत्व भगवाना॥
दो० तब आज्ञा यम दीन्ह यह हरि पुर द्वार दिखाय।

देहु नरक महँ वास पुनि जामहँ छमि अधिकाय॥

सो० दिनमणि सुतगण ताहि चले बांधि लै तुरतही।
मिले आइ मग माहिं हरिगण सहित विमान बुध॥

मोचि बन्दि ते रथहि चढ़ावा। यम पायकन डाटि दुरिआवा॥
खलहु चहत तुमनरक निवासा। हरिदासन दुख देत न त्रासा॥
कुसुम सेज सुख ज्यहि प्रभु हेता। त्याग्यहु ताहि नीच दुख देता॥
पुर बैकुण्ठ बेगि लै गयऊ। यमचर यमढिग आवत भयऊ॥
भूत कथा पग बन्दि सुनाई। सुनि आश्चर्यित भो यमराई॥
पद्मासन ध्यायउ असुरारी। कारण कवन तरयो अघकारी॥
तब नभ बाणि ताहि समुझावा। शय्यादान अमित सुख पावा॥
तत्फल नश्यो अघौघ अपारा। अरु पायउ बैकुण्ठ बिहारा॥

दो० एक पुष्प अर्प्यउ हरिहि बिवश बस्यो हरि धाम।
जिन यज्ञादिक फल प्रभुहि अर्प्यउ ते गुण ग्राम॥

सो० अपर अनेक सुजान दान प्रभाव बिमोचि गे।
कहँ लगि करिय बखान मंगल धनि दाता पुहमि॥

प्रण॥

दातापन जाके मन आवै। सो प्रण दृढ़ता चित्त बसावै॥
जो प्रण करै तजै सो नाहीं। कोटि बिघ्न आवैं किन जाहीं॥
भूतल होत जासु प्रण पूरा। गुण निधान सो नरवर शूरा॥
नारि नेह त्यागब न कलेशू। नहिं कठिनता अग्नि परवेशू॥
अरुण अगम परित्यागब काया। देश विदेश फिरब तजि जाया॥
मौन होब जल निबसब शीता। क्षुधा तृषा परिहरब अभीता॥
बोलि बचन प्रतिपालब भाई। अतिशय कठिन मनुज तनपाई॥
जासु प्रतिज्ञा होत न पूरी। लोक अलोक सकट सो धूरी॥

दो० दाता जो प्रण उरधरै करै ताहि हितमानि।
यद्यपि भुवतल अछतही देखिपरै कछुहानि॥

प्रण प्रताप भवसागर पारा। होत सहज यह श्रुति मतसारा॥
त्रिविधिमनुष्य भूमिप्रणधारी। उत्तम मध्यम लघुमति चारी॥
जो प्रणनिज न तजत संसारा। सो उत्तम जन वेद बिचारा॥
संकट परै कि सुगमहि होई। पूरण बिन परिहरत न सोई॥
काज करत यक सप्रण सनेहू। साधत कछुक रहित सन्देहू॥
दंड देखि बीचहि प्रणत्यागी। मध्यम बैठ रहत सुखपागी॥

यकसुनिदुखप्रथमहिभयमानी। करत न काज अंत अघजानी॥
ते लघुमति जानिय बुधिवाना। प्रगट संत इतिहास बखाना॥

दो० आनकर्म शुभ रंचनहिं कीन्ह मनुज तनताय।
निजप्रण परिपूरण किये लहा मोद बहुभाय॥

सो० सुनौं सुजन इतिहास जो सुनिमन दृढ़ता गहै।
अन्तसुलोक निवास पाय सकल अघगण दहौ॥

टिट्टभ एक सुवाम सुजाना। बसत जलधि तट सदा अमाना॥
कालक्षेप करत सँगनारी। वासन कोउ न जीव दुखारी॥
प्रमदा गर्भवती त्यहिकेरी। हृदय चाह सन्तान घनेरी॥
समय पाय अण्डा त्यहिदीन्हे। बहुत दिवस पुनि सेवन कीन्हे॥
उदधि बीचका यकदिन बाढ़ी। देखि बिकल भइ पच्छिनि गाढ़ी॥
अण्ड बहाय उदधि लैगयऊ। नभ गामिनि उरबड़ दुखछयऊ॥
बहुरि भई जब गर्भिणि वामा। तब बोली करि पतिहि प्रणामा॥
यहथलत्यागिबसिय कहुंआना। इत जलपति हरिहै शिशु प्राना॥

दो० पुरुषकहा सुनु भामिनी अनत कहां चलि जाउँ।
यहथल प्रिय बहुदिन बस्यो भाव न दूसर ठाउँ॥

सो० जो अबकी लवणोद मम संतानहि बोरिहै।
तौ न पाइहै मोद सुनुमम प्रणचिय कानधरि॥

जलउलीचि सबथलमहँ डारौं। मृतिका शुष्क सिंधु तन पारौं॥
विहँसियोषिता बचन उचारा। अहंकार क्यहि काज सँवारा॥
कहँ पयोधि प्रभु पारनवारा। कहँ पौरुष तव करिय बिचारा॥
बुधन चहिय जो शक्ति विहाई। करिप्रण अयश लहै दुखदाई॥
पतिबदसुनु सुखदायिनिजाया। हौं प्रणकरौं त्यागि छलछाया॥
श्री नारायण प्रति उरबासी। करिहि सहाय जानि जनहासी॥
तब कामिनि तन धीरज आवा। कन्त प्रतिज्ञा सुनि सुखपावा॥
दियेअण्ड वा थल पुनि ताहीं। दम्पति समुद बसत है जाहीं॥

दो० खगप्रण गुणिभुकि नीरनिधि अंडा दिये बहाय।
रुदत खगिनि शावकदुखहि खगत्यहि रहाबुझाय॥

प्रभुहौं तुमहि प्रथम समुझावा। बालक दण्ड अमित इत आवा॥
बसिय आनथल तबनहिं माना। प्रण अलीककिय युतअभिमाना॥
बिन जलराशि सुखाये नारी। करौं न भोजन पियौं न बारी॥
दुओ सक्रोध उदधि महँजाई। डारिनि धूलि चोंच भरिलाई॥
अरु लै उदक दुहुन घलडारा। रेणु समुद्र मेलि सचिकारा॥

इमि जलथल मृतिका जलडारैं। अतिश्रम गलित न हियद्वौहारैं॥
हरि प्रेरित कुम्भज तहँआये। देखि बिहाय सकर्म भुलाये॥
पूंछा कहा करत यह ख्याला। तिनबिथुरित सबकथ्यौ हवाला॥

दो० घटसम्भव उर सुनि कथा बाढ़ी दया अपार।
कहासिंधु प्रतिसहज सुनि दे खगतन यहिबार॥

सुनि अगस्त्य बाणी जलराशी। साभिमानि इमिगिरा प्रकाशी॥
यहविहंग मुनिवर अहँकारी। कीन्ह प्रतिज्ञा कानि बिसारी॥
तबद्विजप्रतिऋषिबचनबखाना। उदधि सुखाय न सक कुलवाना॥
देखु पयोधि अगाध अपारा। सोकिमिच्छीणपरिहिनबिचारा॥
तबखग उत्तर मुनिकहँ दीन्हा। सुनौं दयालु जौन प्रण कीन्हा॥
जब लग याहि न देउँ सुखाई। जल न पिऔं हरि चरण दुहाई॥
तन परिहरि पुनि धरौं शरीरा। चारिखानि महँ जहँमुनि धीरा॥
तहँ बहोरि खद्द करौं उपाई। ज्यहि प्रकार लवणोद सुखाई॥

दो० ममउर मुनि प्रज्वलित जलज संतति नाश निहारि।
प्रण तजि नरक निवास है गावत वेद विचारि॥

सो० दृढ़ प्रणताकर जानि बहु समुझायो सिंधु कहँ।
दीजिय सुत न गलानि बूझि कठिन प्रण पच्छिकर॥

यद्यपि मेरु न मसक उठावै। अरु न पिपीलजलधितरि जावै॥
नहिं खद्योत निशातम नाशै। फणिमणिकरतनदिवसप्रकाशै॥
हरि माया विपरीत पयोधी। तद्यपि श्रुति बरणत चहुँ कोधी॥
मांगे रत्न दिये तुम नाहीं। अहमित निज अगाधतामाहीं॥
देवासुर मथि सकल निकारे। एक बार तुम मानहि हारे॥
उदधिसकोप वचनइमिभाष्यउ। अबमुनितुमखगकोप्रणराख्यउ॥
कोटि जन्म यहु जल बहिरावै। तबहुं सुतन ऋषीश्वर पावै॥
तजि हठ ऋषि जाइय प्रणशाला। असकहि गयउ पवनजलपाला॥

दो० जानि निरादर मुनि हृदय उपज्यो क्रोध बिशाल।
अग्नि दृष्टि लखि तासु दिशि अचय गये तत्काल॥

जलचर विकल भये बिन नीरा। चाहि चाहि भाषत उर पीरा॥
तब समुद्र निज मान दुराई। मुनितट आव जोरि कर भाई॥
जस आयसु तुम्हार मुनि होई। तस हौं करौं न संशय कोई॥
द्विजवर कहा देहु द्विज सूना। वद्यौ सिंधु भल सहित प्रहूना॥
ततक्षणहीं बालक लै आवा। देखि खगिनिखग मोद बढ़ावा॥
हिय लगाय सुत दाह मिटावा। बारबार मुनि पद शिरनावा॥

मम दुख हरयो दया कृपारा। रक्षिप्रणहिं सुतशोक निवारा॥
अब अनुशासन जो ऋषि, देहु। सोहम करैं रहित सन्देहु॥

दो० कहमुनीश सुनु व्योमचर अबयहि ठामहि त्यागि।
बास करौ थल दूसरे मम निदेश रस पागि॥
तेनिज सुतलै बन्दि पग थल तजि गये उड़ाय।
जलधि भरयो मुनि बहुरि सुनि उदधि बिनय बहुताय॥

सुत सुखलह्यउ दह्यउ अरिछाती। प्रणप्रभावभव सुयश बिभाती॥
जन प्रहलाद भजन प्रण कीन्हा। तासुप्रतापदरशहरिदीन्हा॥
गंग तनय प्रण दृढ़ मति साधा। चक्र धरा करहरि गतबाधा॥
बाण सेतु बन्धन प्रण साजा। मग कपिपतिहि उतारन काज॥
सेतु बिरचि हनुमत सन भाषा। उतरियपारसदृढ़रचिराखा॥
जन प्रण जानि दृष्टि तल दीन्ही। सोमायाकपीन्द्रमनचीन्ही॥
तब प्रकट्यउ कृतज्ञ यदुराया। दोउन में मित्रत्व कराया॥
यहि विधि अगणित जन प्रण पूरा। कहँलगकथिय अपारसमूरा॥

दो० मंगल प्रथम बिचारिये जग न काज अस कोइ।
राम कृपा बुध मनुजसन जो न देह धरि होइ॥

उपाय॥

जो नर प्रणी होइ संसारा। सो उपाय कर करै पसारा॥
क्लेशित रहत न जगत उपाई। श्रुति पुराण यह सम्मत भाई॥
करत उपाय शुद्ध चित जोई। भुवतल चतुर कहावत सोई॥
जल अन्नादि बस्तु परि धाना। मिलत नजगनिरुपाय सुजाना॥
गति कीरति विद्या धन ताता। बिन उपायनहिंदेत बिधाता॥
यदपि चहिय जन माच उपायक। तदपि विशेष गृहस्थै लायक॥
मूढ़ भूमि सुर वृक्ष असारा। कादर नृपति कृपण धनवारा॥
जग बल्लभा कुरूप अयोगा। तापस धनी वृद्ध बश रोगा॥

दो० शूद्र अचारी निशि अविधु शशि यामिनी बिहाय।
तथा शिथिल गेही बिबुध जीवत मृतक खभाय॥

जे शिथिलता निकट नहिं जाहीं। ते जन रुष्ट पुष्ट दरशाहीं॥
अरु न दीनता तिन ढिग जाई। भागिचलत लखिपुरुषउपाई॥
शैथिल मैथुन भोजन भोगी। अचल स्वथलजिमिसब दिनरोगी॥
वैद्यत तन रिपु गद रिपु ठाढ़े। लिये निघंट निदानहिं गाढ़े॥
दीन शिथिल अघ खानि प्रबीना। रोगित गात यथा तनछीना॥

निज कर जल नहिं पियत उठाई। बाहु रहित जस पर करभाई॥
भूमि धरत पद लाज सतावै। होरिलकिधौंकाष्ठचढ़िआवै॥
निज कर काज सधत नहिं कोई। पराधीन जीवत जड़ होई॥
दो० मनुज उपायी उद्यमी भूतल भूप सुजान।
तजि हर दूसरद्वारसो नहिंयाचत सज्ञान॥
सो० विकलित कतहुं न होत बिपति काल नर उद्यमी।
प्रति पालतनिजगोत करिउपाय अगणित धरणि॥
बिरचे लोचन हरि हित मानी। देखि चलै मारग जग प्रानी॥
देखत शिथिल परारे नैना। कारज बनै नशै दुख हैना॥
श्रवण दिये प्रभु सुनिबे काजा। परश्रुतिसुनतशिथिलगतलाजा
रसना रची बचन के हेता। बोलत पर मुख बचन अचेता॥
कर्म करण हित हस्त बनाये। साधत कारज पाणि पराये॥
गति निमित्त दीन्हे गति वाना। शिथिलपरेगृहधौं बिनप्राना॥
बुधि व्यवसायिनि तनहिं बसाई। चिपुर व्यवस्था सकत बताई॥
सोपि शिथिलसँगपरिशिथिलानी। मौनितभणत न लाभनहानी॥
दो० बदत आलसी भाग्य धनि श्रमत न करब उपाय।
बिधि इच्छा बिपरीत नहिं होत वृथा श्रम जाय॥
सो० जो कोउ निस्पृह होइ सो यह मत सेवन करै।
जासु न बन्धनकोइ सुतचिय गुरुशिष प्रियअनुज॥
भोजन पात्र अग्र भरि धारे। क्षुधानशाय न बिन मुखडारे॥
कर्म कथा पाहन की रेखा। घटतबढ़तनहिं श्रुतिमतदेखा॥
तदपि उपाय किये सुख होई। निरुपायक सुख लहै न कोई॥
धिक जीवन आलस बश ताता। जप तप तीरथ आलस घाता॥
को आलसी भयउ मुनि ज्ञानी। जनआलसीनीच अघखानी॥
राज्य धर्म धन का सुन भाई। भवतलआलसदीन्ह नशाई॥
कीरति सुकुल लहत श्रम कारी। सबुधिउपायकरत नरनारी॥
एक राजमंत्री कोउ रहई। सम्पतिअमितभवनकोकहई॥
दो० तासु सदन के निकट ही यक ज्ञानी प्रण साल।
अंतर्यामी ज्ञान निधि जन दैवज्ञ बिशाल॥
सो० सो मंत्री को मीत तन मन बचन प्रबीण जन।
मंत्री रहत अभीत सदा भवन ते तासु बल॥
ताके धाम पुत्र जब भयऊ। तब दैवज्ञ तहाँ चलि गयऊ॥
भादि योगतिथि लग्न सवारा। पंच अंग फल हृदय बिचारा॥

एक अश्वपति सुत यह होई। बड़ अधिकार लहै नहिं कोई॥
क्लेशित रहै जन्म भरि सूना। सोबिचारि ज्ञानिहि दुखदूना॥
लक्ष जवाधिक पितु के जाके। हय बर एक रहै गो ताके॥
जाकर जनक नृपति मंची बर। कोउअधिकारनरहहितासुकर॥
अमित द्रव्य है जासु निकेता। आयुसकल काटिहि अघ खेता॥
अहह दैव कर्तव बिपरीता। निजथल गयउ गुणी भयभीता॥

दो० जानि कर्म गति मौन भो कहा न काहू भेद।
भजन लग्यो निजआतमहिं तजिबिषयजसब खेद॥

पुनि द्वितीय जन्मेउ सुत ताके। लक्षण तुरत बिचारेउ वाके॥
बधिक होइ नित खग एक पावै। मोल तासु जीविका चलावै॥
तदा काल ज्ञानी मन शोचै। बहु दुख गलित नैन जल मोचै॥
जो मंचिहि सुत भाग्य सुनाऊं। तौन महीतल शोभा पाऊं॥
दैव जान होवै बिपरीता। करतसदाहरि निजमन चीता॥
मंची कतहुं आव निज धामा। कियोजाय मुनिबरहिप्रणामा॥
कह ज्ञानी सचेत निज काजा। करयोसदा जेहि झुकै न राजा॥
सविनय कारण पूंछ प्रधाना। सुतग्रहफलकछुकीन्ह बखाना॥

दो० तादिन तें मंची सदा रहत सचिन्त प्रबीन।
पुनिदुहिताभइतासुतेहिंजन्मपचिका कीन॥
गणिका होवैबालिका महापाप की खानि।
मनमलीनज्ञानीभयउयहबिचारिउरआनि॥

सो० अबकोउबिपति कराल मंचीसदनहिंआइहै।
तजियलयाहीकालचलितपकीजियआनमहि॥

मिच बिपति हिय चित्त सतावै। भजन भंगता बश बुध गावै॥
कर्म्माक्षर बिधि लेखनि होई। मेटिन सकत त्रिपुर तेहिकोई॥
असगुणिगुणी त्यागि निज शाला। गयउ बिदेश तजे अघमाला॥
इत मंचिहि लग बड़ अपराधा। सो सुनि भूप क्रोध मन साधा॥
इति प्रधान धन धाम लुटावा। सदनतासु तत्क्षणहि खुदावा॥
त्रियसुत बिपतिबिवश गृहत्यागी। बसे आनपुर जीव न लागी॥
तजेउ नारि तन तहां सकोहा। दुहितापुत्रन भयउ बिछोहा॥
ज्येष्ठ सूनु काहू नृप ठाई। सेवक अश्ववार भो जाई॥

दो० द्वितिय पुत्र नितबिपिनि महँ करिपक्षी आखेट।
बेंचि हाट निज कर्म बश भरत आपनो पेट॥

कन्या कर्म स्वैरिणी लीना। बहु पतिरमणकरै भ्रम हीना॥

मुनि निज मन कीन्हा अनुमाना। चलि देखौं का दशा प्रधाना॥
मंत्री पुर आवा मुद मानी। तहां न गृह प्रभुता नहिं प्रानी॥
अति पश्चात्ताप उर छयऊ। पुर बासिन सन पूछत भयऊ॥
सुनि दुर्दशा तासु मन शोचू। कित सन्तान बदिय युत रोचू॥
अश्ववार बालक बड़ ताको। अमुक नृपाल सैन थल वाको॥
द्वितियबधिककृत करत सदाहीं। रहतपुरहिकहुदृढ़ थिरनाहीं॥
कन्या कुलटा कर्महि लागी। कुकृत बिनाशत निज जठरागी॥
दो० महा व्यथित ज्ञानी भयउ बिधि कर्तब अनुमानि।
कीजिय अवशि उपाय अस लहैं सकल सुखखानि॥
प्रथम भूप कट काइ मह तासन कीन्ह चिन्हारि।
महा मग्न मंत्रिज भयउ ज्ञानी रूप निहारि॥
निज वृत्तान्त सब रोइ सुनावा। कुछन तात अब बनत बनावा॥
कह दैवज्ञ बेंचि हय आजू। पर ऋण पाटि शेष सुख साजू॥
डर्यो जोरि कर सारत बोला। किमि संग्रहौं भूप हय मोला॥
जो मम होत नाथ किंक्याना। तौ करतेउं जस आपु बखाना॥
पण्डित कहा डरौ जनि ताता। लिखा एक हय कर्म विधाता॥
तुरग तुरत तब बेंच्यो ताहीं। धन लै दयउ धनिन भय नाहीं॥
सो सुधि पाय महिप मुसकाना। बाजि आन पठवा तेहि थाना॥
मुनि कह जब दुख पायउ भाई। बाहन बेंचि लियउ सुख पाई।
दो० शीघ्र बिधाता अपर तुरि तुम कह देहै तात।
बोधि ताहि सुत द्वितियपहँ गयउ गुणी पछितात॥
बिगलित केश सबस्त्र कुचीला। जेहि बिलोकि बन डरपैं भीला॥
मिलतेहि आपन हाल बतावा। अति आनन्द सुनत तेहि पावा॥
निजकुदशा बरणी सबिलापा। श्रवणित गुणी उरस्थल तापा॥
सुनसुत आजु कहा करु मोरा। जो साधतहि होइ भल तोरा॥
जबलग हौं न कहौं तब लागी। फाँस्यौ खगन जाल बुधि खागी॥
गुणी बचन करि अंगीकारा। चल्यौ अखेट समुनि युत जारा॥
सघन गहनलखि जाल डसावा। जो खग आव सोचतुर उड़ावा॥
यहै करत संध्या नियरानी। बोल बधिक तब आरत बानी॥
दो० आजु जीवका तुम हरी मोहिं भयउ उपवास।
नृपति श्येन तत्कालही जाल पर्यौ अनयास॥
सो० डौंड़ी महिप सुजान जेहिलगिफिरवाईनगर।
लावै जौन शचान शत मुद्रा सो पावई॥

ज्ञानी कहा पकरु अब भाई। भली वस्तु तोरे कर आई॥
जबलै श्येन नगर महँ आवा। चीन्हि सबन नृप सदन पठावा॥
शत मुद्रा लै दीन्ह शचाना। आवा बधिक मुदित निज थाना॥
प्रातकाल ज्ञानी समुझावा। सुनौ तात जेहि कारण आवा॥
यक पक्षी तव कर्म विधाता। नितप्रति मिलै लिखा सुनुताता॥
यहिकारणसोइगहेउखगामी। हिंसा बचै मिलै धन नामी॥
अस उपदेशि चला मतिमाना। पुचिहि खोजत नगर अयाना॥
निजचरित्र मिलितासन भाषा। तेहिँ विश्वासकीन्ह तजिमाषा॥

दो० सुनु बालिका प्रधान की मोर सुखद उपदेश।
जासु करत ही दुखअखिल नाशै लिखा प्रजेश॥

आजु साजि नवसुनि शृंगारा। बैठौ सथिर मुदित निज बारा॥
जबलौरसिकन असकोउआवै। जो शत मुद्रा मोल चुकावै॥
काहु सौं न होह रतिकारी। मानि सीख यह सुरुचि हमारी॥
जसमुनिकहाकरौतेहितैसा। दिन बीत्यौ नर मिल्यो न ऐसा॥
जो शत मुद्रा देइ प्रसंगै। उपजी व्यथा स्वैरिणी अंगै॥
प्रहरएक निशिअपरसिरानी। तब बोली त्रिय आरत बानी॥
कृपा पयोधि नीक उपदेशा। भा बत जीवहि कठिन कलेशा॥
धरु धीरज बालिका अयानी। मिलिहिअवश्य पुरुष सुखदानी॥

दो० व्यभिचारी आये किते सनि मुद्रा रिसमानि।
पलटि गये निज धाम कहँ यों दुर्वचन बखानि॥

टकहैया कुलटा इतरानी। द्रोणिनिचालि मरालिनि ठानी॥
ताही काल काम मतवारा। आवा धनिक स्वैरिणी द्वारा॥
मुद्रासुनि मनकीन्ह बिचारा। कोगुण अधिक रमिय यहिबारा॥
दैधनतासु रमण तेहिकीन्हा। पुनि समोद निज मारग लीन्हा॥
गुणीप्रातउठि निजमगलयऊ। पुचिहि बहुरि सिखावन दयऊ॥
तोरे भाल लिखा करतारा। बहु पति रमण सदा व्यभिचारा॥
यहिकारण सुनिसीखहमारी। बिनधन कथित न रमेउ दुलारी॥
जातबाट हरिगण चलिआवा। बिहँसि बिप्र कह बचन सुनावा॥

दो० अस उपाय तुम कीन्ह द्विज हम कह भयउ कलेश।
हय खग नर हम नितप्रतिहि पहुँचावत प्रतिदेश॥

सो० देखिय चतुर उपाय तीनौ दुखियन सुख लहा।
कसन कीजिये धाय जग उपाय मंगल स्वहित॥
जीवन सकट लखात भाग्य उपाय सुचक्र है।

एक रहित थकिजात भाग्यमान भवशिथिल नहिँ॥

सावधानता॥

जो नर प्रण उपाय चित धरई। सावधान सो कारज करई॥
नर चैतन्य बिबिधि सुख साजै। गुणी शिरोमणि सुथल बिराजै॥
बिकल न होतकठिन छतहेरी। चैतनता बश सकत निबेरी॥
नहिँ आशक्त होत भव भोगा। सावधान साधत शुभ योगा॥
अतिशयधन्य ताहि जगजाना। रहत जो सावधान प्रति थाना॥
सब गुण सावधानता माहीं। बदत संत श्रुति संशय नाहीं॥
क्षुद्रबुद्धि जो कारज करई। सो न क्षमातल पूरण परई॥
चितथिर बिन न लहै गुणकोई। हरिपद भजन न जपतप होई॥

दो० सावधान रहियै सदा पाइ चतुरता ज्ञान।
सकल सिद्धिता संगही पाइय बदत सुजान॥

सो० जो दुस्तर छतहोइ सावधान करिसकत कोउ।
बैकल सरलतजोइ बिदित प्रकृतिफलसुनिबदत॥

क्षणक बुद्धिनहिं लहत बड़ाई। इतउत भ्रमित सकष्ट लखाई॥
सथिर सैमुखी पुरुष सक्षेमा। नित कल्याण भाव ब्रतनेमा॥
क्रोध मान मत्सर न सतावै। शुद्धधीय मन क्षोभ न आवै॥
भूप विशेषि सदृढ़ बुधि होई। न्याय समय अघ लहै न कोई॥
संगर थल प्रबंध नृपताई। सावधानता बड़ गुणभाई॥
चलित चित्त कादरता बासा। बरणत सुकृती सुजन शुभासा॥
सुयश सुकीरति बिपुल जहाना। सावधान पावत अनुमाना॥
भ्रमतन बिषय काज कठिनाई। समुद रहत अरि ताहि डराई॥

दो० चारिखानि भष जीवबहु लाति लखिय संसार।
सदृढ़ मनीषा भावबश उत्तम नर अवतार॥

साधु एक नियमी ब्रतधारी। बिज्ञानी योगी सुबिचारी॥
देवदृष्टि त्यहि तपफल भयऊ। तृष्णा लोभ मोह तजि दयऊ॥
कर्षि प्राण ब्रह्मांड पठावै। जहां न बिषय बयारि सतावै॥
त्रिकुटीनितहि त्रिबेणीन्हाना। सुनत अनाहतध्वनि कलगाना॥
पुनि समाधि ते बाहिरि आई। संसृतवत बिहरत प्रतिठाई॥
एक दिवस कहुंत हि भिटाने। मृत्यु दूत पासी करआने॥
कोतुम तात जात क्यहिकाजा। बरणौ नाम ग्राम निजसाजा॥

दो० सुनुमुनि हमहैं मृत्युगण आये तोकह लेन।
बेगिचलौ हरिपुर चतुर रथचढ़िहै नकदेन॥

सो० सावधान मुनिराज भयो न विकलित बचन सुनि।
जाना भजन अकाज कुसमय काल बिचारि बद॥
मृत्यु न सावधान तन चासै। अनृत बाणि तब ममउर भासै॥
तत्क्षण सतन मृत्यु चलिआई। कुटिल रूप लखि काल सकाई॥
तदपि न भय माँना बिज्ञानी। सावधान तासन बदबानी॥
कोसि कराल बपुष तू माया। ममढिग को तोहिं प्रेरिपठाया॥
बिहँसि मृत्यु निज भेद बतावा। तबहुन चल्यौ सदृढ़ निजठावा॥
मुनिकह यदपि ज्ञान असहोई। जबलगिशिथिल न इंद्रियकोई॥
तबलगि चहियनतन परित्यागा। तदपि चलब हम युत अनुरागा॥
आजु नेकु मम यमरहि गयऊ। असभणि कंजासन ऋषि भयऊ॥
दो० प्राणाकर्षि गयउ तहां जहांन मृत्यु प्रवेश।
शून्य भवनदूत व्यथितगण काहि काहैं भ्रम भेश॥
मुनि चातुर्य मृत्यु मनभावा। करिबहु बिनय सप्रेम जगावा॥
अब ऋषितुम बिचरहु भवपंथा। ममगण छुइ न सकै तवसंथा॥
रहिहौ सावधान जबलागी। तबलग मोरन व्यापिहि आगी॥
सावधानता तजिहौ जबहीं। पैहौ मृत्यु मुनीश्वर तबहीं॥
दै बर मृत्युगई ततकाला। बिहरत चतुर सदागत जाला॥
बार अनेक मृत्युचर आये। जबतब सावधानही पाये॥
रुचिर बिलास भयउ दिनएका। जातसाधु कहुं सहित बिवेका॥
देखि काल पूंछी यहबाता। मृत्युहमारि कौनबिधि ताता॥
दो० भणउ काल भूपति सदन शूली लहौ प्रवीन।
सुनि बिस्मित मुनिवर भयउ चिंतत चित्त मलीन॥
सुमिरि मृत्युवर तजेउ गलानी। चल्यौ बिदेश त्यागि रजधानी॥
गहवर बिपिनि महीधर देखा। जहां न नर आगम मनलेखा॥
निवस्यौ तहां सहित सन्तोषा। ध्यावतहरिहि रहितभवदोषा॥
गये मृत्यु अनुचर गिरि ताहीं। मुनिवर बास बूझि मन माहीं॥
भयउ एक गण ततक्षण बानी। दूसर चढेउ साज सब साजी॥
पुच्छओर तेहिदीन्हलगामा। धावत अश्व गिरौ परिणामा॥
उठि बहोरि आरूढित भयऊ। करत ख्यालअस मुनि तट गयऊ॥
बिहसा ऋषि मूरुष अनुमानी। बोला सुखद मनोहर बानी॥
दो० अश्व बार बड़ मूढतू मुख किन देत लगाम।
जोरि हाथ पग बन्दि सो बोलेउ गिरा ललाम॥
मुख लगाम दै चढ़ेउ न ताता। अकर कर्म दुख प्रद पश्चाता॥

दयाराशिचढ़िमोहिंदिखावौ। सेवक जानि न बार लगावौ॥
सहसा सुनि उठि चढेउ तुरंगा। बिसरौ मृत्यु वचन प्रति अंगा॥
चल्यौमरुतगतिहयतेहिकाला। तब सुनि हृदय भयउ दुख जाला॥
क्षण महन्नृप दुहिताग्रह लावा। साधु बिकल मन मोह जनावा॥
देखि सदन बालिका नृपाला। तब चित चढा न भाषो काला॥
सो बाहन तहँ गयउ बिलाई। सुनि अकसर ठाढ़ा तेहि ठांई॥
बिरचि मनुज तनमृत्यु पदाती। भूपहि कहा सदृढ़ करि छाती॥

दो॰ जो सुनि बहु दिन भे नृपति सुना नगर बहि रान।
तब कन्या ढिग गुप्त सो रहत सदा मति मान॥
सो॰ दहेउ अंग नृप केर क्रोधानल सुनतै बचन।
गहौ धाय यहि बेर देहु लाय शूली तुरत॥

नृप अनुगामि झटित तहँआये। झुकत सकोप द्रोह तप ताये॥
देषि ऋषिहिभुजबंधनकीन्हा। अरु बहुदंडबिबिधिबिधि दीन्हा॥
सावकाश मुनिकर नहिआवै। कर्षि प्राण ब्रह्माण्ड सिधावै॥
भूप निकट ताकह चरलावा। मुनि बिलोकि नृप क्रोधबढ़ावा॥
हे हत भाग्य अधम द्विज देहा। तापस बेष दुष्ट छत एहा॥
खैरिण धर्म्म काम बश धारा। तो कह लग्यौ न प्राणपियारा॥
मुनि बद सुनु नीतिज्ञ भुवाला। जन्म समस्त धर्म हम पाला॥
नरपति कह सब कथा सुनाई। सत्य बूझि भूपति मनभाई॥

दो॰ लाइ सूच गल बांधिपुनि तजियबिप्र निष्पाप।
वचनौ भंग न होय अरु मुनि न लहै सन्ताप॥

जबहि सूच सेवक गल डारा। तबहि मृत्यु मुनि प्राण निकारा॥
लखि यहदशा शोचबश राजा। क्रोध बिवश बड़ भयउ अकाजा॥
कर्म बिवश्य जगत दुख भोगा। जीवन मरण कुयोग सुयोगा॥
जब लग सावधान मुनि रहेऊ। तब लग मृत्यु अनल नहिं दयऊ॥
नर चैतन्य किधौं सुर ताता। अचैतन्य जड़ रच्यौ बिधाता॥
चित चातुर्य्य अचेत न हेरिय। सावधान रहिं जन्म निबेरिय॥
जड़ते सुर सुर ते जड़ होई। चेत अचेत भाव हैं दोई॥
निगमागम आनहुमतसाखिय। सावधानता नरता भाषिय॥

दो॰ सावधान रहिये सदा पाय मनुजबपु सत्य।
मंगल दुख नहिं व्यापई सुख उपजै नित नित्य॥

अमानता॥

सावधान जन चहिय अमाना। प्रतिस्थान यक भाव सुजाना॥
मानी मनुज महा सठ जानिय। ताहि न चतुर चतुर अनुमानिय॥
जिनके हृदय मानकर बासा। अवशि लहत ते नरक निवासा॥
प्रात भानु नभ चढ़त समाना। होत अधोमुख लखिय प्रमाना॥
निज पद बड़ जानत लघुहोई। मानी स्वर्ग न पावत कोई॥
जो आपन पद जानत छोटा। होत सबनते सो जन मोटा॥
मान समानन अवगुणआना। भाषत संत कबीस पुराना॥
महिन दबत भूधर के भारा। जस परसत मानी पग छारा॥

दो० जिमिजिमिवुधपदवीबढ़ततिमितिमिनवतसनेस।
मेघ वृक्षवत रहतजग बसत न मान कुगेह॥

उत्तम कुल गुण निधि वर काया। खल रावण बश मानकहाया॥
दुर्योधन बल निधि बड़ राजा। मान बिबश भो दुष्ट सनाजा॥
यादव कृष्ण बंश सुख पूरे। होत मान निवसे मृत्यु धूरे॥
नारद हृदय मान जब आवा। तबशाखामृग बदनहिं पावा॥
बिप्र सुदामा रह्यो अमाना। कीन्ह कुबेर सदृश भगवाना॥
कलिका तरु बिन मान बिहारै। प्रफुलितजानिभूमितेहिडारै॥
तड़ित सदा घन मध्य सोहावै। बाहिर होत धरातल आवै॥
एका उडुपति रूप भुलाना। पक्ष असितउत आव सुजाना॥

दो० आदर नहिं मानीन को हरि सन्मुख सुनु तात।
यहि कारण भुव साधु जन रहत अमान खगात॥

यक निज देखी कहौं कहानी। जाहि सुने नर होइ अमानी॥
बहु गुणज्ञ पंडित बल एका। तुलसीकृत बांचै सबिबेका॥
वैया करण ज्योतिषी कोऊ। जान निघंट निदानहि सोऊ॥
यंत्र तंत्र ज्ञातौ द्वैचारी। हौं तहँ बैठ मूढ़ कुबिचारी॥
निजनिज मति सम तर्क अनेका। करैं कहैं बर्णन भूखेका॥
भाषा देव बाणि बहि शोधै। नवरस काव्य सदृढ़ मतिबोधै॥
जीव काव्य प्रौढोक्ति लखावें। पद्य निरर्थ सार्थ समुझावें॥
गद्य सलक्षण सालंकारा। उपमा बिबिधि करैं निरधारा॥

दो० बाल काण्ड की आदि में बिबरण करत अपार।
गुण निधानबर विप्र यक आवा तहँ तेहिबार॥

सो० प्रगन बाण शिर प्राग जीरण पट धारे तनहि।

बैठ सहित अनुराग नीच भूमि आदर रहित ॥
बरणों राम नाम रघुबर के ॥ हेतु कृशानु मानु हिम करके ॥
बाँचिनि यह चौपाई जबही। पंडित एक अर्थ किय तबहीं ॥
रामनाम कर अमित प्रभावा। पावक रबि शशि हेतुन पावा ॥
द्वितिय बदसि यह अर्थन ताता। मैं बिबरण करिहौं विख्याता ॥
राम नाम कर त्रिबिधि प्रकाशा। ज्वलितप्रचण्डितशीतलभासा ॥
ज्वलित दहन अरु चण्ड दिनेशा। शीतल करत प्रकाश खगेशा ॥
तृतिय कहिसि तुमबरण्यौ जोई। हमरे चित्त न भासत सोई ॥
तीनि रूप गाइय भव रामा। परशुराम राघव बलरामा ॥

दो० अग्नि बंश भृगुबेश लखु भानु बंश रघुनाथ।
अत्रिजात बंशी कहिय बलदाऊ गुण गाथ ॥

सूबेदार एक बड़ ज्ञाता। बोल्यो सुनौ अर्थ अस ताता ॥
अक्षर राम रकार अकारा। अरुमकारयुत करियबिचारा ॥
शिखि कारण रकार अनुमानिय। पुनिअकाररबिहेतु बखानिय ॥
खगपति कारण बदिय मकारा। भाषा बिद इमिकरत प्रचारा ॥
कोउ मानत कोउ मानत नाहीं। तब सोद्विज बोलाबिहसाहीं ॥
भल कह तात अर्थ अस होई। सकन बिदूषि विदूषक कोई ॥
श्रवण करिय हौं देउं प्रमाना। जो प्रथमै शिव कीन्ह बखाना ॥
सब कोउ देखि रहा मुख ताको। नेकहु रहै न आदर जाको ॥

श्लोक रकारोऽनलबीजत्वात्सर्वेषान्दहतिक्षणात् ॥
सर्वम्मनोमलन्नित्यंस्मरणान्नात्रसंशयः ॥१॥
अकारोभानुबीजत्वाद्धृदिस्थम्मोहजन्तमः ॥
नाशयित्वाप्रकाशंस्वङ्करोतिजपतस्सतः ॥ २ ॥
मकारश्चन्द्रबीजत्वाच्छीतलत्वङ्करोतिवै ॥
तथातापत्रयंस्मर्तुर्द्दहेन्नित्यंविचक्षणः ॥ ३ ॥

दो० सुनि प्रमाण भे मुदित सब उठिके सूबेदार।
कण्ठ लगायो बिप्र कह निजप्रियतम अनुसार ॥

सो० निज आसन पर लाय क्रियाताहिआसीनपुनि।
पूछा प्रेम बढ़ाय बदौ व्यवस्था तात निज ॥

कान्य कुब्ज ब्राह्मण मैं भाई। पढ़्यों पुराण कोश कबिताई ॥
जहँ तहँ तर्क करौं करिवादा। जीभ चबाये लगै न स्वादा ॥
एक दिवस अस मन अनुमाना। धिक जीवन जग मनुज समाना ॥
तब हौं वह प्रण धारण कीन्हा। बिचरों भूमि मान ते हीना ॥

धन बिन बिकल पुत्र अरु जाया। इत जीविका हेतु चलि आया॥
मूढ़ जानि कोउ पूछत नाहीं। कहा कहौं दुख की परछाहीं॥
सूबेदार बचन सुनि भाषा। देहु जीविका सदा अभाषा॥
मम घर रहौ भजौ भगवाना। धन्य रूप तुम मनुज अमाना॥

दो० कथा समापत होतही बिप्रहि सूबेदार।
गयउ साथ लै शयन निज मेटे दुक्ख अपार॥
जोपै प्रथमहि मानधरि करतबाद प्रतिबाद।
तौ नहिं आदर होत अस पावत और बिषाद॥

मौनता॥

मान रहित जन मौनित रहई। बचन सामयिक द्वै यक कहई॥
शिक्षा भणै राम यश गावै। बिषयिक गिरा न भूलि सुनावै॥
सीपी यथा बन्द मुखराखै। मुक्ता अवै बचन यदि भाषै॥
रसना अग्र दृष्टि नहिं देई। मौनित रहै सुजनता सेई॥
बातुल बादि बिपुल बकबादी। प्रतिस्थान सो मनुज बिषादी॥
जो बहु बकै बचन मुख तासू। निसरै अर्थ रहित यदि बासू॥
खासखास बतराव असारा। श्रोता बिकल होत मति बारा॥
जहँ द्वै जन सम्मति निज करई। तहां न चतुर भूलि पग धरई॥

दो० अरु नहिं कीजिय बारता द्वितिय बचन को काटि।
बिनपूछेउ नहिं भाषिये रहिय अधर निज चाटि॥

सो० बचन दोष गुण तात प्रथम बिचारिय बदिय तब।
सहसा कहिय न बात जो चाहिय भव सुजनता॥

राज सभा विशेषि चुप साधै। बचन अबूझन भूलि अराधै॥
समय स्वभाव पाइ रुख गावै। सो जन नृपति सभा न लजावै॥
बहु बादी पंडित जड़ तूला। काटत खंकर प्रतिष्ठा मूला॥
यकवय हितू जुरैं यदि धामा। तदपि बचन भाषिये ललामा॥
वृद्ध सभा गुणवन्त अथाई। चुपकि रहियतजि मान बड़ाई॥
जो सुनि आन मनुज दुख पावै। भूलिहु चतुर न सो सुख लावै॥
दोष छिद्र जो लखिय परावा। बर्णिय ताहि न श्रुतिअसगावा॥
आपु प्रकट होइहि खर आगी। तू कहि कतवनु पिशुन अभागी॥

दो० मनुज रिझावन काज जनि अनृत बादकरु तात।
हास्य बिलासी भूमि तल तुच्छ बिवेक लखात॥

सो० बहु गढि छोलि बनाय एक भणत बाणी सरस।

जेहिते चतुर लखाय फल बिपरीत प्रवीण सुनु ॥
होत कि धन्वी बहु शर डारे। सुमति सराहत बेधा मारे ॥
अमित बारता अवशि न भाई। कथियस्वल्प बुधसीखि सोहाई ॥
प्रणव शब्द बड़ अन्तर खोखा। तस बहु कथिक चातुरी धोखा ॥
बाक्य व्यंग पंडित मन भावै। यद्यपि लघुतम रूप बनावै ॥
मणिकणगहत त्यागिशिलभारी। देखिय सार असार बिचारी ॥
मोल थोर जाकर बहुताई। लोह स्वर्ण की का समताई ॥
सबके हृदय रजत रज चाहा। रज अत्यंत परी मग माहा ॥
पेटु न फूलत बिनु बतराये। को सुख नर गुण अवगुण गाये ॥

दो० चुपसाधिय कै हरि भजिय अथवा बचन सुवाक।
यहिबिधिकाटिय रैनिदिनजनिहूजियबककाक ॥

सो० यकनिजमीतहिपाय कहत न भाष्योद्वितियसन।
तुम कह देव बताय गुप्त भेद निज सहज मति ॥

सो अति मूढ़ ग्रस्यो शठताई। चकित रहै निज भेद बताई ॥
मीतहु के जग मीत अपारा। तिनसौं भाषिहिभेद तुम्हारा॥
यहि प्रकार क्रम क्रम संसारा। गुप्त भेद प्रकटै प्रति द्वारा ॥
पुनि न गुप्त करि सकियै भाई। कोटि जन्म धरि करिय उपाई ॥
यहिकारण निजभेद न भाषिय। करि व्यवसाय पेटही राखिय ॥
इषुधी गत न बाण कर आवै। तिमि न बात पुनि बदन समावै॥
शुभ गुण सदन मौनता ताता। सेइय ताहि पाय नर गाता ॥
कुसमय बचन नीकहू फीका। रस शृंगार न रण भूठीका ॥

दो० संगरथलअरिपाय बुध करिय न अधिक प्रचार।
चीरद जो गाजत डहकि बर्षत सोन सुधार ॥
मौनबाणिकीबाणिगहि समयिकबचन बखानु।
प्रति निकेत भूतल चतुर सुयश प्रतिष्ठा जानु ॥

बाँधि सुरभि यक चला गवासा। मारग मांझ दिखावत चासा ॥
धेनुदुखित खल बश बिकलाई। मोचत बन्दि न करत उपाई ॥
महा शोकमय गो तेहिबारा। परी दुष्ट कर करत पुकारा ॥
दैवयोग गो बन्धनि टूटी। सानँद सुरभि नीच ते छूटी ॥
चली भागि जड़ पीछे धावा। थाकेउ धाइ न पुनि गहिपावा ॥
दृष्टि ओट रम्भा भइ ताता। बहु चाण्डाल हृदय पछिताता ॥
अति क्रोधित हेरत मग जाता। जिततित गोपद खोज लगाता ॥
पन्थी मिल्यो एक अहंकारी। पूछिसि तासन नीच हँकारी ॥

दो० तुम देखी गो जात इत सुनि मन क्रोध्यो सोइ।
मेरी अरु यहि नीच को कौन बारता होइ॥
सो० बहुरिपूछ तेहि धाय तद्यपि पथिक न बोलकछु।
को खल सन बतराय हौं बड़ पद को मनुजजग॥
सबिनय जब गवास नियरावा। तबतेहिताहिडाटिदुरियावा॥
कासेवक तव जो सुधि कहऊं। जानत हौं न बतावत अहऊं॥
दुखित अग्र मगु लीन कसाई। मिल्यो एक पंडित पुनि भाई॥
धार्म्मिक सतवादी गुण राशी। तेहिगवारि यहबाणिप्रकाशी॥
तुम इतते आवत द्विजराई। देख्यो गो यक जात पलाई॥
बिप्र कहा अगमन है ताता। सुनि गो शत्रु धाव मुद गाता॥
सुरभी पकरि कीन्ह बध जाई। सुनौ चरित बुध चित्त लगाई॥
समय पाय तन तजि अभिमानी। बन्धित गयउ समन रजधानी॥
दो० अरु पंडितहू काल बश भयउ गयउ यम धाम।
न्याय समय रबि सुत बद्यो बचन सनय गुण ग्राम॥
अहंकार पाल्यो धरि काया। नेकहु सुकृत न तात कमाया॥
एक धर्म कीन्हेउ बिन जाने। गोन बतायउ खल अनुमाने॥
तत्कल नरक क्लेश नहिं होई। करु बिहार सुरपुर अघ खोई॥
पंडित हरि शोच यमराजा। सकल जन्म कीन्हेउ शुभकाजा॥
यद्यपि रहै मृत्यु गो ताता। तद्यपि तुमहिं लाग गो घाता॥
नरक भोगि जन्मौ खल योनी। व्याकुल भयो सुनत सुर चोनी॥
खल पावा निवास सुर धामा। बस्यो नरक पंडित गुण ग्रामा॥
मौन अमौन प्रताप बिचारिय। उर बिशेषि मौनितगुणधारिय॥
दो० असह सोहावन समय बल ज्यों बिवाह में गारि।
शुभहु अशुभ जिमि भूषिता बुधसहगामिनिनारि॥
सो० जमंगल गुण धाम तेन बखानत बचन बहु।
भाषत मूढ़ अकाम बिषय बारता हेतुबिन॥

अक्रोधता॥

मौन धर्म्मधर होइ अक्रोधी। यह चातुरी बिपुल बुध शोधी॥
क्रोधी मनुज मनुजता हीना। रहतदिवसनिशि कोपअधीना॥
अग्नि समान ज्वलित मनहोई। हितु अनहितु तरुजारत सोई॥
काहु काल न होत अछोभा। हिंसा मिलित न पावत शोभा॥
जगत अकारण रिपुता धारे। जात न दया क्षमा के द्वारे॥

छुवत डसैं बिषधरही तूला। बिनु अपराध सबहि छत शूला॥
क्रोध रहित जन सदा बिवेकी। अचल मनीषा अघ अहि के की॥
प्रति पुर तासु प्रतिष्ठा ताता। अखिलमनुजहितुतेहिजनुभ्राता॥

दो० जितहि क्रोध निवसत चतुर धर्म रहत तित नाहिं।
बिबुध बिवेकी साधु जन बूझि देख मन माहिं॥

सो० शिव भगवान प्रमान क्रोध बिवश सुत बध कियो।
यदपि दान दिय प्रान तदपि अपूरब बात बुध॥

हरि अवतार परशु धर भाई। बध्यो मातु निज क्रोधहि पाई॥
नारायण श्रीअवध बिहारी। बिप्र गोत्र बध कीन्ह हकारी॥
बासुदेव निज मातुल घाता। क्रोध बिवश नहिं दूसर बाता॥
भरद्वाज सुत मुनि बिज्ञानी। हन्यो सुहृद रण भई गलानी॥
लोमस उरहि क्रोधजब आवा। तब भुसुंडि कह द्रोण बनावा॥
यहि कारण जो क्रोध दुरावै। जीवन मुक्त परम पद पावै॥
हिंसा तात क्रोध की जाया। दानि अधोगति नारि अदाया॥
क्रोध बिगत सज्जनता जानौ। क्रोधी पुरुष शमन सम मानौ॥

दो० जिनके बिमल बिवेक उर क्रोध रहित ते संत।
बिचरत भूतल स्ववश नित ध्यावत करुणा कंत॥

सो० ब्रीड़ित क्रोधी होत जित तित बुधजन पुहमि तल।
लहत न ज्ञान उदोत कोटि यतन क्रोधी मनुज॥

एक सरोवर कच्छप एका। निवसत सदा सजाति अनेका॥
क्रोध बलितनित तासु स्वभावा। सहि न सकत पर बचन अभावा॥
तेहि सर राज हंस युत नारी। बसत रहै धीवर नभ चारी॥
मिच भाव कच्छप सनमानै। सत्य सुहृद तन मन अनुमानै॥
कच्छप हू नित करै सनेहा। रहित प्रपंच समन बच देहा॥
ऋतु निदाघ सरनीर झुराना। दम्पति राज हंस दुख माना॥
सम्मतिकीन्ह तजिय यहबासा। बसिय आन सर देखि सुपासा॥
कच्छप बोलि मंच निज भाषा। प्रियतम नारिन छल कुछराखा॥

दो० बहु कलेश उपजहि इहां सरवर भयउ निराप।
ताते जाइब आनसर छम्यो दोष सन्ताप॥

सो० सुनत बहुत दुख लाग सबिनय भाषेउ हंस प्रति।
त्यागबहमहु तड़ाग कालक्षेपन बिन जलहि॥

अस उपाय कीजिय कोउ भाई। रहब एक सर होइ सदाई॥
बिहंसि हंसकह हम नभ चारी। रच्या भूतल तात तुम्हारी॥

मेदिनि चलत हमहि कठिनाई। अगमनाक मगु तुम कह भाई॥
कछुकेहि भांतिलेहुंतोहिसाथा। बूझिय उर नित उत्तम गाथा॥
जो तजि मोहिं तात तुम जाहू। तन परि हरौं बिरह दुखदाहू॥
यहि कारण कीजिय व्यवसाऊं। बचै प्राण तब पुण्य प्रभाऊ॥
पक्षि राज कह तुम अति क्रोधी। जगत मनुज उपहासि बिरोधी॥
पंथ जात तव नाहिं उबारा। लज्जा लहौ किये उपचारा॥

दो० बचन बन्ध मोसन करौ तजिके कोप स्वभाय।
बोलबहमनहिंपंथ मह तौहमकरहिं उपाय॥

कच्छप बचन बन्ध तब कीना। सहव पंथ उपहास्य प्रबीना॥
मौन धर्म धरि बोलब नाहीं। त्यागब तात क्रोध परछाहीं॥
सबिनय नारिकहासुनु स्वामी। थल मारग न सुखित जलगामी॥
अरुन प्रकृति त्यागत भवप्रानी। होत न स्वेत काक बर पानी॥
मिच मोर यह प्राण पियारी। चलत संगकिमि तजिय दुखारी॥
पलटत प्रकृति समय बल नारी। मकरा गमत न तपत तमारी॥
अस कहि हंस प्रबोधिसि जाया। बहुरि एक तरु शाखालाया॥
कच्छप प्रति इमिबचन बखाना। मध्य शाख मुख गहौ सुजाना॥

दो० तब शाखा कच्छप गही निज मुख सदृढ़ प्रबीन।
दुहु ओर दम्पति चतुर चोंच दाबि तेहिलीन॥

सानंद नभचर चलेउ उड़ाई। लांघत बिपिन गोच समुदाई॥
एक नगर तट बाल समूहा। तिनहिंबिलोकिमचाइनिहूहा॥
राज हंस विद्याधर भाई। लखौ कला कसकीन्ह सोहाई॥
ऊड़हि आपुकच्छपहि उड़ाई। पक्ष रहित नभ बिन श्रम जाई॥
बड़ आश्चर्य बिलोकेउ आजू। स्यन्दन कच्छ अश्व खग राजू॥
सुमत कच्छ क्रोधा नल दहेऊ। बचन सकोप सुतन प्रति कहेऊ॥
जोनदेखि सकहोहु सो अन्धा। रिस बश भूल्यो हंस निबंधा॥
बोलत ही सो रसातल आवा। घेरि शिशुन बहुदंड दिखावा॥

दो० हंस हंसिनी दुख बलित बिकलमनहि पछिताय॥
गये अभीष्ट सरोवरहि कच्छप इतिहि बिहाय॥
जोन बोलतो क्रोध बश रहतो शान्त स्वभाव।
तौन पावतो क्लेशअस बसत्यौ प्रियतम ठाव॥
मंगल परि हरि क्रोध शिखि रहु समोद संसार।
मन तृण को यहि दुष्ट तजि नाहिं जलावन हार॥

दीनता ॥

जासु हृदय दीनता निवासा। अंत लहत सो हरि पुर बासा ॥
दीन भाव सम भावन दूजा। तपसा यज्ञ भजन जप पूजा ॥
नवधा भक्ति करै नर कोई। बिन दीनता मोक्ष नहिं होई ॥
अहंकार जाके मन राजै। जाय तासु जप भजन अकाजै ॥
मृत्तिका मय शरीर लहि भाई। चलिय न नभदिशि शीश उठाई ॥
निजपद चीन्हि चलत जनजोई। तासु पदच्युत कतहुं कि होई ॥
गर्वित जग मग आपु बिसारे। तेन चतुर बुध बदत पुकारे ॥
आपुहि तुच्छ सबन ते लेखै। गुण द्वितीय निज अवगुण देखै ॥

दो० निन्दा मत परि हरि रमै सबको जानि प्रबीन ॥
दीनमनुजबड़ सकलबिधि जिततितआदरपीन ॥

जो जन चहै उच्च पद ताता। सो निज पदहि करै लघु ज्ञाता ॥
अहंकार मान्यता न देवै। बड़ पद चहै दीनता सेवै ॥
स्वर्गारोहण दीन स्वभावा। जो गहि अमित जनन सुखपावा ॥
रेणु गगन पथ चलत उड़ाई। जल परि कीच बसत अध जाई ॥
निम्न गमन पय बसत पयोधी। अचल रूप निर्मल चहुं कोधी ॥
निज पद दृष्टि दिये जो चालै। परै न बिपति कूप तिहुं कालै ॥
विषय कांटगति बान न शालै। अरुन फसै पदवी दुख जालै ॥
प्रभु पुर साधु दीन जन होई। जपी तपी पद लहत न कोई ॥

दो० अखिल गुणन शिर मौर बुध बदत दीनता भाव।
दीन भाव जाके हृदय तेहि नर तन फल पाव ॥

सो० मानी नीच महान यदपि देव गुरु सरसगुण।
दुखरूपी अभिमान तजियताहि करि यतन बुध ॥

रुद्र रूप श्री बर हनुमाना। यह भाषत श्रुति संत पुराना ॥
तिनके उरसि दीनता सोहै। सबते लघु निज पौरुष जोहै ॥
बसत सदा सुग्रीव निकेता। तेहि सेवत मन बचन समेता ॥
देव बधू खोजन हित कीशा। दक्षिण दिशिहि पठाव कपीशा ॥
बलनिधिजानिमुद्रिका रामा। तिनहि दीन पूरण गुण ग्रामा ॥
जब लवनोद कूल सम्पाती। सिय सुधि कही गिद्ध अघघाती ॥
तब निज पौरुष सबन बखाना। पै न बचन भाष्यो हनुमाना ॥
जाम्बवान कह जरा सतावा। लंघौ उदधि होइ दुख दावा ॥

दो० बालि तनय बल राशि बद पारजाउं दुख हैन।

पलटि न पावों लांघि तौ पुनि मम प्राण बचैन ॥

सो० निज निज बलके तूल आन बली सुख कहि उठे।
काहुन कहेउ अभूल सीय सुधि लावों अवशि ॥

रिच्छ राज हनुमति प्रति भाषा। काबल तात गुप्त करि राखा ॥
तुम सम बलीनकोउ दलमाहीं। मौनित तात कहौ कस नाहीं ॥
हौं सुकंठ सेवक अच्छेशा। मोरे बुधिबल नहिं लव लेशा ॥
होय सहायक तोर प्रतापा। लंका जाउन मन संतापा ॥
दीन गिरा सुनि भालुपजाना। सिय सुधिलायसिकिहिहनुमाना॥
लंघेउ सिंधु रहित अभिमाना। जानि दीन सीता सन्माना ॥
रामचन्द्र पहं पुनि जब आये। तब प्रभु भुज भरि कंठ लगाये ॥
कीन्ह प्रशंशा सुनि दुख माना। निज बल नहिं तव बल भगवाना ॥

दो० ब्रह्म शक्ति बेधित गिरे लषण समर जब तात।
लावसुखेनहिद्रोण पुनिनहिंअभिमानितगात ॥

कुशलव समर भरत समुझावा। पैन कपीस हृदय मद आवा ॥
लांघ्यो सिंधु सीय पद आशा। संगर थल किमि लँघो निराशा ॥
निज पौरुष जो काज सम्हारै। सो प्रति थल भटता अनु सारै ॥
जो परतंच काज करि आवै। सो कस मान हिये निज लावै ॥
तेहि संग्राम सकल तन मोहै। राम शयन सुख स्यन्दन सो है ॥
अंजनि तनय सदृढ़ रण रहेऊ। मोहन बाण हृदय नहि दहेऊ ॥
यह देखिय दीनता बड़ाई। प्रतिथल मान रहा समुदाई ॥
सहस शीश यक रावण भयऊ। तासु बधन प्रण रघुबर ठयऊ ॥

दो० चले क्रोधि सब बीर बर जाम्बवान लंकेश।
भरत लषण रिपुदमन अरु सुर सुकंठ देवेश ॥

सो० बदैं परस्पर बैन समर भूमि खेलब सुरुचि।
कछुभयचित्तहिहैन हमसनकोजीतिहियुधिहि ॥

हनुमत कहा रहै दशशीशा। तेहि रण जीते अखिल कपीशा ॥
शीस सहस्र जासु तन राजै। तासन को रण भूतल बाजै ॥
हमरे हृदय परम सन्देहा। हिमगिरि सरिश मसक छतकेहा ॥
जुरे युद्ध आवा खल सोई। अस्थिस्थूलकिमि कहि सकेकोई ॥
एक नराच समर थल त्यागा। तासु पवन रामादल लागा ॥
सकल रेणुवत गयउ उड़ाई। सुर नर नाग भालु कपि राई ॥
रामसिया हनुमान बिहाई। रहेउ न चतुर पुरुष तेहि ठाई ॥
जीति सबल संग्राम सच्छेमा। आये अवध राम युत नेमा ॥

दो० जिनके मदते उड़िगये रहे दीन कपिराज।
जय पाई जग यश बड़ो प्रिय मानो रघुराज॥

साधुता॥

यदा दीनता हृदय बिराजै। तत्क्षण साधु रूप छबि छाजै॥
को गुण शिष्ट साधुता त्यागी। होत साधु मति नर बड़ भागी॥
जाके उर न द्वेष मद मोहा। नहीं मान मत्सर अघ कोहा॥
दुख सुख रहित सदा भवडोलै। नीति बिहाय बचन नहिं बोलै॥
सब करि हितु ताके जग माहीं। अनफल काहु को चाहियनाहीं॥
हंस भांति नीरज मुख बानी। अघगुण बिलग करै पय पानी॥
अप दश पदयक भाव बिहारी। अध ऊरध गति किधौं बिसारी॥
करणी विपुल बचनि का थोरी। अवगुण रहित सदा गुण धोरी॥
साधु पुरुष कह भूमि तल नहिं दुर्लभ कछु तात।
कहत ज्ञान निधि रेख करि श्रुति गावत बिख्यात॥
क्लेश बिबिधि बिधि सह्यो कपासा। बसन रूप ह्वै पर दुख नाशा॥
अरु इक्षांस दंड तन सहेउ। अंत शर्करा रूपहि लहेऊ॥
सब कह प्रिय सब कह सुख दाता। साधुजन्म तस कीन्ह बिधाता॥
साधु मनुष्य धन्य तिहुं काला। बन्धितनहिंबिषयीभ्रमजाला॥
सहज समोद बिदोष निवारे। जड़ता मदन होत मतवारे॥
अघ गण हरण सुमंगल मूरति। बंचित कतहुं कि माया धूरति॥
अचल बुद्धि सरबाग बिलासी। मंगल सदा नन्द सुख राशी॥
मग्नात्मा रहत प्रति धामा। पर भल चहत सुरुचि गुण ग्रामा॥
दो० यदपि कुरूप कुयोनि भव साधु सै मुखी प्रानि।
तासु प्रसंशा देव मुनि करत मोद उर आनि॥
साधु महत्त्वन कवि कथि पावै। कवि जल राशि पपील थहावै॥
भये अनेक अहैं पुनि होई। कलि कालिमा बहुत जिन धोई॥
युगलांछन मेटत अरु मेटैं। कतहुं कि पात कुकर्मसमेटैं॥
बिबिधि रूप बिचरत संसारा। चीन्हि न परम दुबिधि तनधारा॥
यक बंचक यक साधु सुजाना। बिना परीक्षा एक समाना॥
यहियुग खल बिशेषि बकहंसा। करत जहां तहँ आपु प्रशंसा॥
साधु आचरण बिन पछिलाई। पाइ न सकत भूमितल भाई॥
मनुज अपार बिपुल मत लोका। बिरला साधु स्वभाव बिलोका॥
दो० साधु बचन आधीन बुध सदा बिश्व कर्तार।

देत मनोरथ तुरतही नेक न लागत बार॥

साधु स्वभाव बिदित प्रह्लादा। व्याकुलकीन्ह पिता मनुजादा॥
प्रकट खम्भ पाहन रघुराई। खलबधि निज जन लीन बचाई॥
घटत अवज्ञा सिंधु बिचारी। सूख्यउ नीर मुये जलचारी॥
चन्द्रकुलतलखिमुनिदिय शापा। क्षीणभयउ तनसहि बड़ितापा॥
नारद यदपि शूद्रनी जाये। साधु स्वभाव विष्णु मन भाये॥
केवट सुता पुत्र मुनि व्यासा। बिदित साधुहरि रूप सुबासा॥
इमि अनेक भे पूरब काला। कलि भक्तन कर सुनौ हवाला॥
रामानन्द राम रस लोभे। काशी पुरी सु आसन शोभे॥

दो० शुभग पंथ प्रचलित कियो खची नानक शाह।
वाह गुरू जी बुध बदत सिद्ध कबीर जुलाह॥

सुन्दर दादू धुनिया पाई। निज मत भुव तल दीन चलाई॥
नाम देव छीपी जग जाना। प्रतिमहिप्यायो क्षीरसुजाना॥
सदन कबीर बडप्पन पायउ। निर्मल मन प्रभुको गुण गायउ॥
जाट धना की प्रकट कहानी। जन्मो खेत बिन बीज मिलानी॥
चर्मकार अंत्यज की काया। रायदास कस यश जग छाया॥
प्राणनाथ जीवन मस्ताना। जित तित ख्यात ज्ञात पथ ठाना॥
जगजीवन दूलन छत बानी। प्रगट जहां तहँ साधु न मानी॥
स्वर्णकार मुनिदास सुजाना। खरुचि पंथ कीन्हों निर्माना॥

दो० अचलदास तुलसी लखिय मंगल अपर अनेक।
शुद्ध किये बहु शुद्ध भे करि साधुता बिवेक॥

कहँ लग बरणौं साधु बड़ाई। शेष सहस मुख सकत न गाई॥
यहि कारण हौं रहा लजाई। रबि प्रकाश सिकता चमकाई॥
जहँ मणि माणिक मोल न पावैं। तहां कांच को पद कर लावैं॥
बागीधर जित बोलि न सकई। गूंगा तित प्रतिष्ठ को तकई॥
मति अनुसार ग्रन्थ यह गावा। जस कुछ पढ़ा सुना मन आवा॥
जो बालक यहि चित दै सुनई। अथवा पढ़ि मन बचक्रम गुनई॥
चतुरहोइ तजिविषयबिकारा। सत्य बचन कबि सुमन पुकारा॥
प्रथम भाग यह पूरण भयऊ। भारद्वितियकर निजशिरलयऊ॥

दो० बक्ता श्रोता काव्य के और प्रचारण हार।
लहैं स्वर्ग फल गुरु छपा जीवत सुयश उदार॥

कवित्त ॥

ज्ञानी प्रह्लाद दास तासु भगवन्तदास राजाराम तासु ताते बदत गनेश है। ताके सुत शुभग बिहारीलाल गाइयत बकशीसराम तासुतनुज सुदेशहै॥ तासु सूनु मूढ़मति मंगल निवास ग्राम सरही बिराजत कठेहरि प्रदेश है॥ जीविका बिवश्य परो पैतेपुर पाठशाल मनोमतपाय कीन्हो ग्रन्थउपदेश है॥

दो० शुक्ल तृतीया शुक्र रबि पुष्य नक्षत्रहि पाय।
कियाग्रन्थ पूरणसुरुचि मंगलमोद बढ़ाय॥

इति श्रीमत्समस्तविषयांधकार विधुप्रकाशिकायां
मंगलदास बिरचितायां उपदेशचंद्रिकायां
प्रथमोभागः समाप्तः॥ १॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
बारहमासा बलदेव प्र०	कथा श्री गंगाजी	वैद्य जीवन	मुहूर्त्त दीपक
मनोहर लहरी	अवधयात्रा	औषधिसंग्रह कल्पवल्ली	बृहज्जातक सटीक
गंगा लहरी	भरतरी गीत	अमृतसागर बड़ा व छोटा	जातकालंकार
यमुना लहरी	दानलीला व नागलीला	वैद्य मनोत्सव	जातकाभरण
जगद्विनोद	दोहावली व रत्नावली	दिल्लगन	होरासकरंद
शृंगार बत्तीसी	गोकर्ण माहात्म्य	दुलाजुल गुर्बा	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक
राग	श्री गोपाल सहस्र नाम	ज्योतिष भाषा	संस्कृत उर्दू टीका
राग प्रकाश	कथा सत्यनारायण स०	जातक चन्द्रिका	मनुस्मृति
लावरी	हनूनाटक	जातकालंकार	विष्णु हारीत
किस्सा वगैरह	हनुमान बाहुक	दैवज्ञाभरण	महिम्न स्तोत्र
नानार्थ नौ संग्रहावली	जनक पच्चीसी	ज्ञानस्वरोदय	व्रतार्क
ब्रह्मसार	हरिहर सगुण निर्गुण	रमलसार	याज्ञवल्क्य स्मृति
शिवसिंह सरोज	पदावली	रमलनौ रत्न	संस्कृत भाषा टीका
भक्तमाल	बनयात्रा	इन्द्रजाल	अमरकोष तीनों कांड
इन्द्रसभा	कायस्थ वर्ण निर्णय	संस्कृत की पुस्तकें	याज्ञवल्क्य स्मृति
विक्रम विलास	विहार वृन्दावन	लघु कौमुदी	संध्या पद्धति
बैताल पच्चीसी	समर विहार वृन्दावन	सिद्धान्त चन्द्रिका	व्रतार्क
सिंहासन बत्तीसी	कल्प भाष्य	भाषा तत्व प्रकाश	भगवद्गीता टीका ह०
पद्मावती खंड	लक्ष्मी सरस्वती संवाद	पञ्चमहायज्ञ	भगवद्गीता टीका आ०
शुक बहत्तरी	रसायन प्रकाश	निर्णय सिन्धु	गीत गोविंद
बकावली सुमन	दरसी	संग्रह शिरोमणि	कथा सत्यनारायण
चहार दरवेश	अक्षरावली	भगवद्गीता पञ्चरत्न	परमार्थसार
क़िस्सा गुल सनोवर	स्वयम्बोध	दुर्गापाठ मूल व सटीक	शार्ङ्गधर संहिता
सहस्र रजनी चरित्र	ज्ञान चालीसी	विष्णु भागवत	पाराशरी सटीक
राबिन्सन् का इतिहास	दोहावली	कथा यम द्वितीया	शीघ्र बोध सटीक
सती विलास	बाला बोध	अपराध भंजन स्तोत्र	लघु जातक
सीता हरण	विद्यार्थी की प्रथम पुस्त०	कायस्थ कुल भास्कर	षट्पञ्चाशिका
क़िस्सा मर्द औरत	किताब जंत्री	कायस्थ धर्म्म निरूपण	सामुद्रिक
सांगीत प्रह्लाद	गणित कामधेनु	तथा छोटा	गरुड़ पुराण
मुतफ़र्क़ात	लीलावती	मथुरा सभा	रामविवाहोत्सव
शनिश्चर की कथा	पटवारियों की पुस्तक ४ भा०	ज्योतिष	सर्रिश्ते तालीम की
ज्ञानमाला	वैद्यक भाषा	मुहूर्त्त गणपति	पुस्तकें
गोपीचंद भरतरी	निघण्ट	मुहूर्त्त चक्र दीपिका	संस्कृत
अद्भुत रामायण	अमरविनोद	मुहूर्त्त चिन्तामणि स०	ऋजु पाठ १ भाग

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ऋजु पाठ २ भाग	तथा ३ भाग	गुटका २ भाग	१८६८ ई०
तथा ३ भाग	अवध देशीय भूगो	तथा ३ भाग	पु[illegible]दारी २६ सन्
धात्वर्णव	ल	हिदायत नामा मुदर्रि-	१८६६ ईसवी वगैरह
नागरी कैथी	इंग्लिस्तान का इति-	सान्	ऐक्ट स्टाम दस्तावेज़ा-
वर्णमाला कैथी १ भा-	हास	पशु चिकित्सा	त १८ सन् १८६९ ई०
तथा २ भाग	हितोपत्रिका	पट्टा बख़्त कैथी	ऐक्ट ताल्लुक़दारान्
तथा कैथी फ़ारसी	बाला भूषण	तथा क़बूलियत	मक़रूज़ अवध २४
नागरी	पद्य संग्रह	रजिस्टर दाख़िल ख़ा-	सन् १८७० ई०
हरूफ़ मुफ़दति	भाषा काव्य संग्रह	रिज तुलबा मदर्सा	ऐक्ट चौपायों का म-
अक्षरारम्भ	कवित्त रत्नाकर १ भा-	रजिस्टर हाज़िरी पाठ-	दाख़लत बेजा १
वर्ण प्रकाशिका १ भा-	तथा २ भाग	शाला	सन् १८७७ ई०
तथा २ भाग	मंगल कोष	क्षेत्र व्यवहारिक तत्व	ऐक्ट मजमूआ ज़ा-
सूरजपुर की कहानी	अंक प्रकाश	१ भाग	बिता फ़ौजदारी १०
धर्म्म सिंह का वृत्तांत	गणित प्रकाश १ भा-	तथा २ भाग	सन् १८७२ ई०
शिक्षावली	तथा २ भाग	व्योहार पत्र संग्रह कै-	ऐक्ट माल गुजारी
शिशु बोध	तथा ३ भाग	क़ानून कैथी	मग़रबी व शिमाली
पत्र हितैषिणी	तथा ४ भाग	पटवारियों के क़ायदे	१९ सन् १८७३ ई०
पत्र दीपिका	गणित क्रिया	उर्दू कैथी महाजनी	तरमीम मजमूआ
विद्याचक्र	क्षेत्र प्रकाश	टिकट के लाइसन्स का	ज़ाबिता फ़ौजदारी
विद्यांकुर	क्षेत्र चन्द्रिका १ भाग	ऐक्ट २ सन् १८७८ ई०	११ सन् १८७४ ई०
पदार्थ विद्यासार	तथा २ भाग	नागरी	तक़ावी के क़ायदे
पदार्थ ज्ञान विटप	सकील दायरा	ऐक्ट लगान मग़रबी	सवाल व जवाब पु-
भोज प्रबंधसार	रेखागणित १ भाग	व शिमाली १० सन्	लिस
राजनीति	तथा २ भाग	१८५९ ई०	अवध रुहेलखण्ड
भाषा लघु व्याकर-	बीज गणित १ भाग	इंडियन पिनल कोर्ट	रेलवे का दस्तूरुल
ण १ भाग	रामायण तुलसी कृत	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौ-	अमल-
तथा २ भाग	बाल काण्ड	जदारी ऐक्ट २५ सन्	ऐक्ट स्टाम्प १ सन् १८६२ ई०
भाषा तत्व दीपिका	अयोध्या काण्ड	१८६२ ई०	किताबें जो छप रही
भाषा चन्द्रोदय	आरण्य काण्ड	ऐक्ट रजिस्टरी २०	हैं उनके नाम नीचे
भूगोल तत्व	किष्किन्धा काण्ड	सन् १८६६ ई०	लिखे हैं
भूगोल दर्प्पण	सुन्दर काण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदाल-	मार्कण्डेय पुराण उर्दू भा-
इतिहास तिमिर ना-	लंका काण्ड	त २६ सन् १८६७ ई०	मदन पारिजात
शक १ भाग	उत्तर काण्ड	मजमूआ ऐक्ट अवध	सन चन्द्रिका
तथा २ भाग	गुटका १ भाग	लगान १९ सन्	इति